दैनिक

पुष्पांजली टुडे

MPHIN/2021/83938

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 362 | ग्वालियर, 1 नवम्बर बुधवार 2023 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

न्यूज ट्रैक

सारा अब्दुल्ला से तलाक ले चुके हैं सचिन पायलट, चुनावी हलफनामे से हुआ बड़ा खुलासा

कांग्रेस नेता सचिन पायलट अपनी पत्नी सारा अबदुल्ला से तलाक ले चुके हैं. उनके चुनावी हलफनामे से यह खुलासा हुआ है. सारा अब्दुल्ला जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री और नेशनल कांफ्रेंस प्रमुख फारूक अब्दुल्ला की बेटी हैं. सचिन पायलट और सारा अबदुल्ला की शादी 2004 में हुई थी. 25 नवंबर को होने वाले राजस्थान विधानसभा चुनाव के लिए नामांकन प्रक्रिया 30 अक्टूबर को शुरू हुई थी. मंगलवार (31 अक्टूबर) को टोंक विधानसभा सीट से सचिन पायलट ने अपना नामांकन दाखिल किया तो उनके तलाकशुदा होने की बात सामने आई. चुनावी हलफनामे में जीवनसाथी के आगे तलाकशुदा लिखा है.

सचिना पायलट और सारा अबदुल्ला दो बेटों के हैं माता-पिता-सचिन पायलट और सारा अब्दुल्ला के दो बेटे आरन पायलट और विहान पायलट हैं. हलफनामे में सचिन पायलट ने बेटों को आश्रित बताया है. 2018 में चुनावी हलफनामे में सचिन पायलट ने सारा अब्दुल्ला की संपत्ति की डिटेल भी दी थी लेकिन इस बार हलफनामे में उनकी संपत्ति का विवरण नहीं है.

सचिन पायलट और सारा अबदुल्ला के बीच कैसे हुआ था प्यार-सारा अबदुल्ला और सचिन पायलट अमेरिका में पढ़ाई के दौरान संपर्क में आए थे. सचिन पायलट अमेरिका की पेंसिलवेनिया यूनिवर्सिटी के व्हॉर्टन स्कूल से एमबीए करने गए थे. यहीं उनकी मुलाकात सारा से हुई थी.धीरे-धीरे दोनों की दोस्ती प्रेम में बदल गई. सचिन एमबीए की पढ़ाई करके दिल्ली आ गए थे लेकिन सारा पढ़ाई के लिए अमेरिका में ही रुकीं. तब दोनों के बीच ई-मेल और फोन से बात होती थी.दोनों ने करीब तीन साल तक डेट करने बाद अपने परिवारवालों को इस रिश्ते के बारे में बताया. चूंकि यह एक अंतरधार्मिक संबंध था, इसलिए परिवारवाले इसके लिए राजी नहीं थे. सचिन पायलट अपने परिवार को मनाने में सफल रहे. आखिर 2004 में दोनों ने शादी कर ली. इस शादी में सारा का परिवार शामिल नहीं हुआ था. धीरे-धीरे अब्दुल्ला परिवार ने भी सचिन और सारा के रिश्ते स्वीकार कर लिया.

सुप्रीम कोर्ट में पहले दिन की सुनवाई में किसने क्या दलीलें दी?

राजनीतिक दलों को चंदा देने की इलेक्टोरल बॉन्ड व्यवस्था के खिलाफ याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में मंगलवार (31 अक्टूबर) को सुनवाई हुई. सुनवाई के पहले दिन याचिकाकर्ता पक्ष ने जिरह की.याचिकाकर्ताओं की तरफ से प्रशांत भूषण और कपिल सिब्बल समेत दूसरे वकीलों ने इस व्यवस्था को अपारदर्शी बताया और इससे भ्रष्टाचार की आशंका जताई. कल यानी बुधवार (1 नवंबर) को इस पर सरकार जवाब देगी.साल 2017 में केंद्र सरकार ने राजनीतिक चंदे की प्रक्रिया को साफ-सुथरा बनाने के नाम पर चुनावी बांड का कानून बनाया. इसके तहत स्टेट बैंक के चुनिंदा ब्रांच से हर तिमाही के शुरुआती 10 दिनों में बांड खरीदने और उसे राजनीतिक पार्टी को बतौर चंदा देने का प्रावधान है. कहा गया कि इससे कैश में मिलने वाले चंदे में कमी आएगी.बैंक के पास बांड खरीदने वाले ग्राहक की पूरी जानकारी होगी. इससे पारदर्शिता ब?गी. एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी समेत 4 याचिकाकर्ताओं ने कहा है कि इस व्यवस्था में पारदर्शिता नहीं है. अब चीफ जस्टिस डी वाई चंद्रचू? की अध्यक्षता वाली 5 जजों की बेंच ने मामले पर सुनवाई शुरू कर दी है.

लोकतंत्र के लिए नुकसानदेह-याचिकाकर्ता एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की तरफ से बोलते हुए प्रशांत भूषण ने इलेक्टोरल बॉन्ड को लोकतंत्र के लिए नुकसानदेह बताया. उन्होंने कहा कि लोगों को यह पता नहीं चल पाता

मध्य प्रदेश की हाईप्रोफाइल बुधनी सीट

बुधनी सीट पर मामा से लड़ने उतरे स्वयं हनुमान, महामुकाबले में मिर्ची बाबा भी

मध्य प्रदेश की हाईप्रोफाइल बुधनी सीट पर इस बार मुकाबला दिलचस्प होने वाला है. मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के सामने कांग्रेस उम्मीदवार विक्रम मस्ताल और सपा कैंडिडेट मिर्ची बाबा के मैदान में होने से त्रिकोणीय मुकाबला देखने को मिलेगा. तीनों उम्मीदवारों ने सोमवार को अपना-अपना नामांकन दाखिल कर दिया.कांग्रेस ने इस बार शिवराज सिंह चौहान को टक्कर देने के लिए धार्मिक छवि वाले विक्रम मस्ताल को लड़वाने का फैसला किया है. विक्रम मस्ताल ने साल 2008 में रामानंद सागर के रामायण सीरियल में हनुमान का रोल निभाया था. वहीं, पहले भारतीय जनता पार्टी और फिर कांग्रेस के साथ रहने वाले वैराग्यानंद गिरी उर्फ मिर्ची बाबा को समाजवादी पार्टी ने अपना उम्मीदवार बनाया है.

क्या बीजेपी के वोटों में सेंध लागा पाएंगी कांग्रेस और सपा-मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान साल 2006 से लगातार इस सीट पर जीतते रहे हैं इसलिए इसे सीट को बीजेपी की सेफ सीट भी माना जाता है. वैसे तो कांग्रेस भी इस सीट पर जीत चुकी है, लेकिन सबसे ज्यादा बार जीत की बात की जाए तो यह रिकॉर्ड बीजेपी के नाम है. इस वजह से इस सीट को बीजेपी का गढ़ भी कहा जाता है. शिवराज सिंह चौहान ओबीसी समुदाय की किराड़ जाति से हैं, और बुधनी में किराड़ जाति की काफी आबादी रहती है इसलिए इस सीट पर शिवराज का बोलबाला है. वहीं, कांग्रेस की बात करें तो

पिछली बार पार्टी ने प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अरुण यादव को टिकट दिया था. बुधनी में यादवों की संख्या किराड़ लोगों से दोगुनी है, फिर भी कांग्रेस का यादव कैंडिडेट को उतारने का दांव काम नहीं कर सका और शिवराज सिंह चौहान रिकॉर्ड वोटों के साथ जीते. इस बार कांग्रेस दांव बदलकर धर्म के सहारे फिर से बुधनी सीट को कांग्रेस के पाले में लाने की कोशिश कर रही है. इसके अलावा, सपा की बात करें तो पार्टी ने चर्चाओं में रहने वाले मिर्ची बाब को मैदान में उतारा है. पार्टी को उम्मीद है कि वह आम जन जीवन के मुद्दों को उठाकर शिवराज को बुधनी में हरा सकती है. मिर्ची बाबा ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि वह विधायक बनेंगे तो सबसे पहले उच्च कोटि के ऐतिहासिक नर्मदा घाट बनवाएंगे. उन्होंने शिवराज पर हमला करते हुए कहा कि सीएम अपने आप को नर्मदा का सपूत बताते हैं, लेकिन नर्मदा नदी के लिए घाट तक नहीं बनवाया.

बुधनी सीट का इतिहास-साल 1985 तक बुधनी विधानसभा सीट पर कांग्रेस का कब्जा था और 1990 में बीजेपी ने शिवराज सिंह चौहान को टिकट दिया और यहां बीजेपी का खाता खुल गया. शिवराज लोकसभा चुनाव के लिए विदिशा चले गए और 1996, 1998, 1999 और 2004 तक वह विदिशा से सांसद रहे. इस बीच बुधनी सीट पर कांग्रेस और बीजेपी की जीत का दौर चलता रहा और 1993 में कांग्रेस के राजकुमार पटेल ने यहां से जीत हासिल की. इसके बाद साल 2003 में बीजेपी ने चुनाव जीता और राजेंद्र सिंह विधायक बने. इसके बाद 2006 के उपचुनाव में शिवराज सिंह चौहान फिर से जीते और फिर 2008, 2013 और 2018 में लगातार जीत हासिल की.

हैकिंग अलर्ट पर सियासी बवाल, राहुल गांधी बोले-जासूसी से हम नहीं डरेंगे, सरकार ने कहा- निराधार हैं आरोप

एपल की तरफ से हैकिंग को लेकर आए अलर्ट ने सियासत में

नया भूचाल खड़ा कर दिया है. समूचा विपक्ष जहां सरकार पर जासूसी करने का आरोप लगा रहा है तो वहीं सरकार का कहना है कि ये पूरी तरह से निराधार बातें हैं.कांग्रेस नेता राहुल गांधी, सपा प्रमुख अखिलेश यादव, आप नेता राघव चड्ढा और तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा सहित अन्य नेताओं ने आरोप लगाए हैं कि सरकार जासूसी कर रही है. सरकार डरकर ये सब कर रही है. केंद्र सरकार ने पलटवार करते हुए कहा कि हम मामले की जांच कराएं, सारे आरोप निराधार है. इस बीच एपल ने पूरे मामले पर बयान जारी किया है.

विपक्षी नेताओं ने क्या आरोप लगाए-मोइत्रा ने कुछ स्क्रीनशॉट शेयर करते हुए कहा, एपल से मुझे टेक्स्ट और ईमेल प्राप्त हुआ कि सरकार मेरे फोन और ईमेल को हैक करने की कोशिश कर रही है. एचएमओ इंडिया को बचने का मौका मिल गया. अडानी और पीएमओ धमकियां देते हैं .आपको ऐसे डरा हुआ देख कर मुझे आप पर दया आती है.

दुबई से शरीर में छिपाकर लाया जा रहा था लाखों का सोना, लखनऊ एयरपोर्ट पर पकड़ा गया यात्री

उत्तर प्रदेश में सोना तस्करी का मामला थमने का नाम नहीं ले रहा है. लखनऊ एयरपोर्ट पर 46.47 लाख का सोना के साथ यात्री को पकड़ा गया है. बिहार का यात्री दुबई से शरीर में छिपाकर सोना लाया था. यात्री ने सोने का बुरादा बनाकर जेली में मिलाया फिर शरीर के निचले हिस्से में छिपा लिया. एयरपोर्ट से बिहार का यात्री बाहर भी निकल गया, लेकिन पुलिस ने हैंडलर के साथ पकड़कर कस्टम विभाग की टीम को सौंप दिया.

जमानत मिलने के बाद 52 दिनों बाद जेल से बाहर आए चंद्रबाबू नायडू, कहा- मैं इस स्नेह को कभी नहीं भूलूंगा

आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और टीडीपी प्रमुख एन चंद्रबाबू नायडू को कौशल विकास घोटाला मामले में मंगलवार (31 अक्टूबर) को हाई कोर्ट से अंतरिम जमानत मिल गई. जेल से बाहर आते ही उन्होंने कहा, मैं इस स्नेह को कभी नहीं भूलूंगा.नायडू के समर्थक जेल के बाहर उनकी झलक पाने के लिए जुटे थे. पोता नारा देवांस भी दादा

से मिलने पहुंचा था. राजमुंदरी जेल से बाहर आते ही नायडू ने पोते को गले से लगा लिया.

चंद्रबाबू नायडू को चार हफ्ते की अंतरिम जमानत-तेलुगु देशम पार्टी प्रमुख चंद्रबाबू नायडू को स्वास्थ्य कारणों पर अंतरिम जमानत मिली है. सोमवार को अदालत ने उनकी जमानत याचिका पर फैसला सुरक्षित रख लिया था. मंगलवारको आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट ने नायडू को 28 नवंबर तक चार हफ्ते की अंतरिम जमानत दे दी.हाई कोर्ट ने नायडू को 28 नवंबर को सरेंडर करने का निर्देश दिया है. इंडियन एक्सप्रेस की खबर के मुताबिक, हाई कोर्ट ने नायडू को अस्पताल में इलाज कराने के अलावा किसी भी अन्य गतिविधि में शामिल नहीं होने का निर्देश दिया है. कोर्ट ने उन्हें फोन पर बात नहीं करने और किसी राजनीतिक गतिविधि में भाग नहीं लेने या मीडिया से बात नहीं करने का भी निर्देश दिया है.

फोन जासूसी के आरोपों पर प्रियंका चतुर्वेदी ने लिखी पीएम मोदी और गृह मंत्री अमित शाह को चिट्ठी, कहा- मामले की करवाएं जांच

शवसेना (यूबीटी) की राज्यसभा सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह को चिट्ठी लिखी है. इसमें राज्यसभा सांसद ने अपने फोन पर हुए %स्टेट-स्पॉन्सर्ड अटैक% की जांच करने की गुजारिश की है. दरअसल, मंगलवार (31 अक्टूबर) को प्रियंका समेत विपक्ष के कई नेताओं ने आरोप लगाया कि सरकार के जरिए उनके फोन को हैक करने की कोशिश हो रही है. टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा, कांग्रेस सांसद शशि थरूर, समाजवादी पार्टी नेता अखिलेश यादव, कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा, एआईएमआईएम सांसद असदुद्दीन ओवैसी, सीपीआई-एम नेता सीताराम येचुरी समेत कई सारे नेताओं ने कहा है कि एपल की तरफ से उन्हें अलर्ट मैसेज भेजा गया है. इसमें उन्हें चेतावनी दी गई है कि उनकी एपल आईडी के जरिए उनके डिवाइस को हैक करने की कोशिश की जा रही है. ऐसा स्टेट स्पॉन्सर्ड अटैकर्स के जरिए किया जा रहा है. **प्रियंका ने अपनी चिट्ठी में क्या कहा**-शिवसेना सांसद ने अपनी चिट्ठी में लिखा, मैं आपका ध्यान उस अलर्ट की तरफ लाना चाहती हूं कि जो मुझे एपल की तरफ से मिला है. एपल ने बताया है कि मेरे फोन की सिक्योरिटी को तोड़ने की कोशिश की गई है. ऐसा स्टेट स्पॉन्सर्ड हैकर्स के जरिए किया गया है. मेरे पास इस मामले को गंभीरता से लेने की हर एक वजह है और मैं आपसे गुजारिश करती हूं कि इस मामले की जांच की जाए.

जाति, रिश्तेदारों और परिवार के लिए टिकटों की मारामारी, महंगाई पर सिर्फ बतोलेबाजी?

राजस्थान, मध्य प्रदेश समेत 5 राज्यों के मतदान में अब 30 दिन से भी कम वक्त बचा है, लेकिन इस बार महंगाई मुद्दा बनता नहीं दिख रहा है. प्याज की बढ़ती कीमत को लेकर कांग्रेस जरूर सक्रिय हुई है, लेकिन उसके बड़े नेता अभी भी टिकट बंटवारे में ही उलझे हैं. जिन राज्यों में बीजेपी विपक्ष में है, वहां पार्टी के बड़े नेता भी महंगाई पर बोलने से कतरा रहे हैं. वजह केंद्र में उन्हीं की पार्टी का सरकार का होना है. आमतौर पर महंगाई के लिए केंद्र सरकार को ही जिम्मेदार माना जाता रहा है.जानकारों का कहना है कि 1990 के बाद से ही महंगाई चुनाव में बड़ा मुद्दा रहा है. महंगाई ने 2004 में अटल बिहारी वाजपेई और 2014 में मनमोहन सिंह की सरकार गिराने में बड़ी भूमिका निभाई. कई राज्यों की सरकार भी महंगाई की वजह से अपदस्थ हो गई. ऐसे में चुनावी मौसम में भी महंगाई का मुद्दा न बनना राजनीतिक दलों की रणनीति पर सवाल खड़ा कर रही है.भारत सरकार के खाद्य मंत्रालय के मुताबिक देश में खाने-पीने के सामान की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी हो रही है. मंत्रालय की मानें तो पिछले एक साल में अरहर दाल की कीमत में 37 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है. चावल के दाम भी 13 फीसदी तक बढ़ा है, जबकि आटा और चीनी की कीमतों में 5-5 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है.खाद्य मंत्रालय के मुताबिक 29 अक्टूबर 2022 को चने दाल की कीमत प्रति किलो 73.34 रुपए था, जो कि 29 अक्टूबर 2023 को बढ़कर प्रति किलो 82.12 रुपए हो गया. एक साल में चने दाल की कीमत में करीब 12 रुपए की बढ़ोतरी हुई है. 29 सितंबर को चने दाल की कीमत 81.52 रुपए प्रति किलो था. यानी पिछले एक महीने में ही चने दाल की कीमत में प्रति किलो 74 पैसे की बढ़ोतरी हुई है.दाल कैटेगरी में पिछले एक साल में अरहर दाल के दामों में सबसे ज्यादा उछाल आया है. 29

अक्टूबर 2022 को अरहर दाल की कीमत प्रति किलो 112.2 रुपए था, जो 29 अक्टूबर 2023 को बढ़कर 154.83 रुपए प्रति किलो हो गया है.पिछले महीने अरहर दाल की कीमत 148.5 रुपए प्रति किलो था. पिछले एक साल में सभी दालों की औसत कीमत में 10-15 रुपए प्रति किलो की बढ़ोतरी हुई है. चावल की कीमत भी लगातार आसमान छू रही है. खाद्य मंत्रालय के मुताबिक भारत में 29 अक्टूबर 2022 को चावल की औसत कीमत 38.14 रुपए प्रति किलो था, जो अब बढ़कर 43.09 रुपए प्रति किलो हो गया है. पिछले एक महीने में चावल की कीमत में एक रुपए प्रति किलो की बढ़ोतरी हुई है. इसी तरह आटा का भाव भी लगातार बढ़ता जा रहा है. 29 अक्टूबर 2022 को आटा का दाम प्रति किलो 28.96 रुपए था, जो इस साल 35.95 रुपए प्रति किलो हो गया है. पिछले एक साल में चीनी के दामों में भी बढ़ोतरी हुई है.1. मध्य प्रदेश-सीएसडीएस ने मध्य प्रदेश में 2018 चुनाव के बाद पोस्ट पोल सर्वे किया था. इस सर्वे में 16 प्रतिशत लोगों ने कहा था कि महंगाई को मुद्दा मानकर उन्होंने चुनाव में वोट किया है. हालांकि, इस बार महंगाई की गूंज चुनाव में नहीं सुनाई दे रही है. कांग्रेस इस बार भी विपक्ष में है, लेकिन पार्टी इस बार इसे बड़ा मुद्दा बनाने में नाकाम रही है. प्रदेश अध्यक्ष कमलनाथ के सोशल मीडिया के एक्स हैंडल से पिछले 3 दिन में 20 से ज्यादा पोस्ट किए गए हैं, लेकिन महंगाई का जिक्र एक भी पोस्ट में नहीं है. कमलनाथ के ज्यादार पोस्ट में कांग्रेस के वचन (गारंटी) और शिवराज के भ्रष्टाचार का जिक्र है. हालांकि, मध्य प्रदेश कांग्रेस के आधिकारिक एक्स अकाउंट से बढ़ती प्याज की कीमत को लेकर जरूर पोस्ट किया गया है. में कितना बड़ा मुद्दा है? इस सवाल के जवाब में किसान नेता और सामाजिक कार्यकर्ता परमजीत सिंह कहते हैं- मध्य प्रदेश चुनाव में स्थानीय स्तर पर महंगाई तो मुद्दा दिख ही रहा है. सिंह के मुताबिक बड़े स्तर पर महंगाई कितना बड़ा मुद्दा है यह विपक्ष के स्टैंड और मीडिया में चली खबरों से तय होता है. वे कहते हैं- विपक्ष के नेता न तो इसको लेकर संघर्ष कर रहे हैं और न महंगाई में मीडिया में जगह पा रही है, इसलिए बाहर से यह नहीं दिख रहा है.2. राजस्थान-चुनाव की घोषणा से पहले राजस्थान में अशोक गहलोत की सरकार ने महंगाई को बड़ा मुद्दा बनाया था. गहलोत सरकार इसके काउंटर के लिए महंगाई राहत कैंप भी चलाया था. राजस्थान महंगाई दर अन्य चुनावी राज्यों की तुलना में काफी ज्यादा है.केंद्र सरकार के मुताबिक राजस्थान में महंगाई दर अगस्त में 8.60 फीसदी पर रही. राजस्थान के बाद तेलंगाना का स्थान था. यहां अगस्त में महंगाई दर 8.27 फीसदी पर रही.सीएसडीएस के मुताबिक 2018 के चुनाव में राजस्थान के 15.2 प्रतिशत लोगों ने महंगाई को बड़ा मुद्दा मानकर वोट किया था. उस वक्त राज्य में वसुंधरा राजे के नेतृत्व में बीजेपी की सरकार थी, जिसे चुनाव में हार का सामना करना

आगामी चुनावों के चलते पुलिस थाना तेंदुआ द्वारा ग्राम खराई, दहरोड, दिगोधि, कुंभरौआ, कूड़ा, रई में फ्लैग मार्च निकाला

आमजन से की शांतिपूर्वक चुनाव व क्षेत्र मे शांति व्यवस्था बनाये रखने की अपील की

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी-आगामी विधान सभा चुनावों को शांतिपूर्वक संपन्न कराने एवं आगामी त्योहारों मे शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए शिवपुरी द्वारा फ्लैग मार्च निकाल कर लोगों को जागरुक किया जा रहा है एवं लोगों से क्षेत्र मे शांति व्यवस्था बनाये रखने की अपील की जा रही है । आज दिनांक 31.10.2023 को पुलिस थाना तेंदुआ द्वारा पुलिस बल एवं बीएसएफ बल के साथ थाना क्षेत्र तेंदुआ के ग्राम खराई, दहरोड, दिगोधि, कुंभरौआ, कूड़ा, रई में फ्लैग मार्च निकाला है । पुलिस द्वारा लोगों से बात कर लोगों को क्षेत्र मे शांति व्यवस्था

बनाये रखने की अपील की और भयमुक्त होकर मतदान करने की अपील की । फ्लैग मार्च मे थाना प्रभारी तेंदुआ अपने बल के साथ रहे । पुलिस द्वारा आगामी चुनावों एवं त्योहारों के मद्देनजर अपनी तैयारियों का प्रदर्शन करते हुये आमजन से क्षेत्र मे शांति व्यवस्था बनाये रखने हेतु लोगों से अपील की । पुलिस द्वारा लोगों से अपील की गयी की अगर कोई व्यक्ति किसी तरह की अफवाह फैलाता है या शांति व्यवस्था को भंग करने का प्रयास करता है या किसी को डराने- धमकाने या लालच देने की कोशिश करता है तो उसकी सूचना पुलिस को दें जिससे उसके खिलाफ कार्यवाही की जा सके ।

फोटो मतदाता परिचय के अलावा 12 तरह के अन्य दस्तावेज दिखाकर किया जा सकता है मतदान

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- 17 नवम्बर 2023 को विधानसभा के लिए होने वाले मतदान में भाग लेने के लिए मतदाताओं की सुविधा के लिए मतदाता परिचय पत्र के अलावा 12 वैकल्पिक फोटो युक्त दस्तावेज दिखाकर मतदान कर सकेंगे।आयोग द्वारा निर्धारित 12 वैकल्पिक फोटोयुक्त पहचान दस्तावेजों में आधार कार्ड, मनरेगा जाब कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, पैन कार्ड, भारतीय पासपोर्ट, फोटो सहित पेंशन दस्तावेज, केंद्र राज्य सरकार,पीएसयू सार्वजनिक लिमिटेड कंपनियों द्वारा कर्मचारियों को जारी किए गए फोटोयुक्त सेवा पहचान पत्र, बैंक, डाकघर द्वारा जारी फोटोयुक्त पासबुक, राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर के तहत आरजीआई द्वारा जारी स्मार्ट कार्ड, श्रम मंत्रालय की योजना के तहत जारी स्वास्थ्य बीमा स्मार्ट कार्ड, सांसदों,विधायकों,एमएलसी को जारी किए गए आधिकारिक पहचान पत्र और भारत सरकार के सामाजिक न्याय मंत्रालय द्वारा दिव्यांगजनों को जारी यूनिक डिसेबिलिटी आईडी शामिल है।विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में सभी मतदाताओं को फोटो पहचान पत्र जारी किया जा रहा है। जो मतदाता वोटर आईडी कार्ड प्रस्तुत करने में सक्षम नहीं हैं, उन्हें अपनी पहचान स्थापित करने के लिए वैकल्पिक फोटोयुक्त पहचान दस्तावेजों में से कोई एक दिखाना होगा।

आगामी चुनावों के मद्देनजर शिवपुरी पुलिस की आदतन अपराधियों पर कार्यवाही

कलेक्टर शिवपुरी द्वारा पुलिस अधीक्षक शिवपुरी की अनुशंसा पर 02 अपराधियों पर जिलाबदर, 02 आरोपियों पर थाना अटैच एवं एक पर एनएसए की कार्यवाही के आदेश जारी किये हैं

राकेश परिहार पिछोर
9691338626

शिवपुरी,। रविन्द्र कुमार चौधरी, कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी जिला शिवपुरी द्वारा पुलिस अधीक्षक जिला शिवपुरी की अनुशंसा पर आदेश पारित किया ङ्क जिलाबदर ---

दिनांक 31.10.2023 को जिले के निम्नलिखित 02 अपराधी को जिलाबदर, 02 थाना अटैच एवं 01 आरोपी पर एनएसए किये जाने का

1.अमर सिंह पुत्र जशरथ परिहार उम्र 30 साल नि. ढगा (कालीपहाडी) थाना करैरा जिला शिवपुरी (म.प्र.) ङ्क 3 माह ।

2.नीलम पुत्र जगदीश सिंह यादव उम्र 32 साल नदावन थाना बामोरकला जिला शिवपुरी (म.प्र.) ङ्क 3 माह ।

3.राजकुमार उर्फ डाडा पुत्र रामहेत धाकड़ उम्र 35 साल निवासी रायपुर थाना बैराड़ जिला शिवपुरी (म.प्र.) ङ्क थाना अटैच।

4.टीकाराम पुत्र सुनमान सिंह गुर्जर उम्र 26 साल निवासी ग्राम गढौली चौकी मगरौनी थाना नरवर जिला शिवपुरी (म.प्र.) ङ्क थाना अटैच।

5. मोनू उर्फ मनीष पुत्र रामसेवक जाटव उम्र 35 साल निवासी वार्ड नं. 13 ब्लॉक के पीछे करैरा थाना करैरा जिला शिवपुरी (03 माह जेल मे रहेगा)

थाना दिनारा द्वारा एफएसटी टीम के साथ मिलकर कार्यवाही करते हुये चैकिंग के दौरान

5 किलो 250 ग्राम चांदी कीमती लगभग 5 लाख रुपये की चैकिंग के दौरान जप्त की गयी

राकेश परिहार पिछोर
9691338626

दिनारा,पुलिस अधीक्षक शिवपुरी रघुवंश सिंह भदौरिया, अति. पुलिस अधीक्षक शिवपुरी संजीव मुले के निर्देशन मे कल दिनांक 30.10.23 की रात्री मे आगामी विधानसभा चुनावों के दृष्टिगत थाना दिनारा द्वारा एफएसटी टीम के साथ

मिलकर वाहन चैकिंग की गई, चैकिंग के दौरान पुलिस व एफएसटी टीम की संयुक्त कार्रवाई में 5 किलो 250 ग्राम चांदी कीमती लगभग 5 लाख रुपये की ध्रुव सोनी पिता नरेश सोनी उम्र 21 साल निवासी झांसी के पास से सवारी आपे गाड़ी मे ले जाते हुये जप्त की गयी है ।

धमाके से दहला एरिया

शहरी क्षेत्र में संचालित फटाका फैक्ट्री में धमाका 3 कि मौत 11 घायल

पुष्पांजली टुडे

दमोह। शहर के फुटेरा वार्ड नंबर 2 स्थित बडापुल के समीप अवैध रूप से संचालित फटाका फैक्ट्री में जमकर धमाका हो जाने से 3 लोगों के मर जाने एवं 11 लोगों के घायल होने का दुखद घटनाक्रम सामने आया है घटना के वार्ड में लोगों का हुजूम इक्कठा हो गया। घटना की जानकारी लगते ही मौके पर कलेक्टर,एसपी सहित ब?ी संख्या में पुलिस प्रशासन, एसडीआरएफ टीम, फायर ब्रिगेड कि टीम रेस्क्यू में जुट गया। घटना में घायलों को वार्ड वासियों और पुलिस प्रशासन कि मदद से एम्बुलेंस से जिला अस्पताल लाया गया जहाँ सभी का तत्काल उपचार डॉक्टरो द्वारा किया गया। घटना में घायल हुये लोगों कि हालत गंभीर बनी हुई है। इस दौरान मौके पर कलेक्टर मयंक अग्रवाल, एसपी सुनील तिवारी, एडिशनल एसपी संदीप मिश्रा, एडीएम मीना मसराम,सीएसपी अभिषेक तिवारी, टीआई विजय सिंह राजपूत, टीआई आनंद सिंह सहित समस्त पुलिस बल,प्रशासनिक अमला एवं वार्ड वासियों के द्वारा घटना में मदद कि गयी और सभी घायलों को अस्पताल भेजा गया। घटना स्थल पर सीएमएचओ सरोजिनी जेम्स वैक भी जानकारी लगते ही पहुंच गयी। घटना कि जानकारी लगते ही क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों में पूर्व मंत्री एवं वर्तमान भाजपा प्रत्याशी जयंत मलैया,कांग्रेस प्रत्याशी अजय टंडन के अलावा ब?ी संख्या में समाजसेवियों नें प्रशासनिक अमले के साथ मिलकर मदद की। देर शाम समाचार लिखें जाने तक जिला अस्पताल के डॉक्टरों द्वारा बताया गया है कि मृतकों में दो महिला और एक पुरुष शामिल है जिनके शव जिला अस्पताल के शव ग्रह में रखवा दिए गए। प्राप्त जानकारी के अनुसार जिला अस्पताल में उमा कोरी, रचना अहिरवार, प्रभा चक्रवर्ती, भारती चक्रवर्ती, रामकली कोष्ठी, हेमलता चक्रवर्ती, विमल प्रजापति, सुशील चक्रवर्ती, नेहा अहिरवार,मोहिनी रैकवार का इलाज जारी है एवं विनीत राजपूत की हालत गंभीर होने पर जबलपुर रेफर किया है।

सिविल अस्पताल बरेली की लापरवाही से गयी मासूम की जान

बरेली--कहने को तो बरेली में सिविल अस्पताल है नाम लड़े और दर्शन छोटे वाली कहावत यहां चरितार्थ होती है सिविल अस्पताल के मानक से यहां किसी भी प्रकार की सुविधा उपलब्ध नहीं है अच्छे डाक्टरों की कमी है ओर जो है वह भी नदारद रहते है । अपनी-अपनी डफली अपनाअपना राज है अस्पताल प्रबंधन की लापरवाही के चलते एक नवजात की जान चली गई । शनिवार को आसिफ कन्डेक्टर की पत्नी ने नवजात शिशु को जन्म दिया?। रविवार को उसकी तबियत बिगड़ी पर उसे देखने वाला कोई नहीं था परिवार के लोग गिड़गिड़ाते रहे पर किसी ने ध्यान नहीं दिया और उस नवजात ने दम तोड दिया।

क्षेत्र में हर समाज के महापुरुषों की प्रतिमाएं करेंगे स्थापितः खत्री

अलीम पठान नजीराबाद बैरसिया। हर समाज में महापुरुषों ने जन्म लिया है और उन्होंने देश एवं समाज के हित में सर्वोपरि कार्य किये है। ऐसे महापुरुषों की जयंती तो समाज मनाती है लेकिन उनकी प्रतिमायें हमारे क्षेत्र में स्थापित नहीं है। हम आगामी पंचवर्षीय योजना में प्रत्येक समाज के महापुरुषों की क्षेत्र में प्रतिमायें स्थापित करेंगे। यह बात भाजपा प्रत्याशी विष्णु खत्री ने ईंटखड़ी में चुनाव प्रचार कार्यालय शुभारंभ के दौरान कहीं।कार्यालय शुभारंभ के बाद भाजपा प्रत्याशी विष्णु खत्री ने कन्या पूजन किया।उन्होंने कहा कि ईंटखेड़ी के पास जगदीशपुर को हमने खोई हुई पहचान दिलाई। इसके साथ ही अफगानी शासक दोस्त मोहम्मद द्वारा छलपूर्वक हमारे बहादुर वीर राजपूत सरदारों का कत्लेआम कर दिया था। हमने उनका बलिदान स्मारक भी बनवाया है। विष्णु खत्री ने कहा कि ईंटखेड़ी में स्थित उद्यौगिक क्षेत्र में लोगों को रोजगार मिलने शुरू हो गए है धीरे-धीरे यह संख्या बढेगी। उन्होंने कहा आप मुझे फिर से आशीर्वाद दो मैं क्षेत्र के विकास में फिर जुटूंगा।

मुख्यमंत्री का रोड-शो हुआ स्थगित

बरेली। भारतीय जनता पार्टी के भाजपा प्रत्याशी नरेन्द्र शिवाजी पटेल के समर्थन में बरेली मे रोड शो करने आ रहे मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का 30 अक्टूबर का आगमन किन्हीं कारणवश स्थगित हो गया है जो रोड शो आने वाली तारीख को विशाल जनसभा के रूप में हो सकता है

आपातकालीन स्थिति में करें हेल्पलाइन नंबरों पर संपर्क : शिवानी जैन एडवोकेट

ऑल इंडिया ह्यूमंस सेव एंड फॉरेंसिक फाउंडेशन डिस्ट्रिक्ट वूमेन चीफ शिवानी जैन एडवोकेट ने श्रीराम अकाउंट्स लॉ एंड इंस्टीट्यूट पर कहा कि आपातकालीन समय में इन हेल्पलाइन नंबरों पर रिपोर्ट दर्ज कर सकते हैं। उन्होंने विस्तार से जानकारी देते हुए 1930 नंबर के लिए कहा कि अगर कोई व्यक्ति आपको मैसेज व्हाट्सएप या सोशल साइट पर गाली दे या फिर फोन कॉल करके धमकी दे। आपके साथ ऑनलाइन फ्रॉड यदि होता है तो साइबर क्राइम की हेल्पलाइन नंबर 1930 पर तत्काल कॉल करके आप अपनी रिपोर्ट दर्ज करा सकते हैं। 1073 नंबर पर आपातकाल में सड़क दुर्घटना के संबंध में मदद ली सकती है।

1915 पर ऑनलाइन शॉपिंग, स्कूल से वस्तुओं की बड़ी हुई कीमत, गुणवत्ता संबंधी गारंटी या वारंटी ,संबंधी, कोई यदि समस्या हो, राष्ट्रीय उपभोक्ता हेल्पलाइन 1915 पर रिपोर्ट दर्ज करा सकते हैं। 1064 नंबर पर यदि कोई सरकारी अधिकारी, सरकारी कर्मचारी आपसे रिश्वत मांगता है, एंटी करप्शन ब्यूरो के हेल्पलाइन नंबर 1064 पर तत्काल रिपोर्ट दर्ज करायें। भ्रष्टाचार रोकने के लिए यह नंबर 106 4 बहुत ही महत्वपूर्ण है। तुरंत कार्रवाई होगी। श्रीराम अकाउंट्स एंड लॉ इंस्टीट्यूट के निर्देशक डॉ नरेंद्र चौधरी एडवोकेट ने गरीबों के लिए निशुल्क कानूनी सहायता पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि विधिक सेवा प्राधिकरण के माध्यम से भारत के उन गरीब लोगों को मुफ्त में विधिक सेवाएं दी जाती है जो अपना मामला न्यायालय के समक्ष रख पाने में असमर्थ है। जिनके पास इतने रुपए पैसे नहीं है और आय के कोई साधन नहीं है कि वह अपना मामला अदालत के समक्ष रख सके। मां सरस्वती शिक्षा समिति के प्रबंधक डॉ एच सी विपिन कुमार जैन, संरक्षक आलोक मित्तल एडवोकेट,ज्ञानेंद्र चौधरी एडवोकेट, सागर उपाध्याय एडवोकेट ,रामबाबू वर्मा एडवोकेट ,डॉक्टर राजेंद्र कुमार जैन, शार्क फाउंडेशन की तहसील प्रभारी डॉ एच सी अंजू लता जी, शालू सिंह एडवोकेट, विमला देवी, थिंक मानवाधिकार संगठन एडवाइजरी बोर्ड कमेटी मेंबर डॉ कंचन जैन आदि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कानूनी जानकारीयों से आप सभी लाभ उठाएं। 15100 पर डायल कर राष्ट्रीय हेल्पलाइन नंबर पर सीधे बात भी कर सकते हैं।

गरीब का उजड़ा आशियाना : सोने चांदी जेवरात नगदी सहित घरेलू सामग्री जलकर हुई खाक

अलीम पठान नजीराबाद बैरसिया। नगर के वार्ड क्रमांक 12 मेला ग्राउंड में रहने वाले कुबेर सिंह अहिरवार की शुक्रवार को मानों पैरों के नीचे से जमीन ही खसक गई जब उसे पता लगा कि उनके घर में आग लग गई है। कुबेर सिंह ने बताया कि वह अपने परिवार के साथ मेला ग्राउंड में रहते हैं उनके परिवार में माता-पिता छोटा भाई एक बहन पत्नी और चार बच्चों है सारा परिवार मेहनत मजदूरी करता है और कुबेर सिंह पेट्रोल पंप पर काम कर परिवार का पालन पोषण करते हैं वहीं घर के सभी लोग शुक्रवार को घर के बाहर काम से गए थे और घटना के समय घर में पत्नी और उनकी 2 वर्ष की छोटी बच्ची घर पर अकेली थी और बड़ी बच्चियां स्कूल गई थी और वह पेट्रोल पंप पर अपने काम पर थे वहीं घरेलू काम करने के बाद दोपहर के समय उनकी पत्नी बच्ची के साथ आंगन में सो गई तभी दोपहर लगभग 2 बजे घर के कमरे में अचानक आग लग गई पर गहरी नींद लगने के कारण मां बेटी को आग का पता नहीं लग सका तभी पड़ोसियों ने घर से धुआं उठते देखा और तुरंत ही नसैनी की सहायता से घर के अंदर दाखिल हो आग बुझाने की कोशिश करने लगे तब तक उनकी पत्नी भी उठ चुकी थी और पड़ोसियों ने कुबेर सिंह को भी फोन कर सूचना दे दी थी और सभी आग बुझाने की कोशिश करने लगे लेकिन तब तक आग भीषण रुप ले चुकी थी तभी मौके पर नगर पालिका की फायर ब्रिगेड ने पहुंचकर आग पर काबू पाया पर तब तक घर का सारा सामान जलकर खाक हो चुका था। कुबेर ने बताया कि हमें अपनी छोटी बहन की शादी करना है जिसके लिए मेहनत मजदूरी करके कमाए घर में रखे नगद लगभग 55 हजार रुपए चार कुंटल गेहूं सोने का मंगलसूत्र लॉकेट दो अंगूठी चांदी की पाजेब पायल बिछिया सहित घरेलू सामान गोदरेज टीवी कूलर राशन सामग्री कपड़े सब कुछ जलकर खाक हो गया। वहीं कुबेर सिंह ने घटना की जानकारी पुलिस सहित बिजली विभाग में भी दे दी है और कुबेर सिंह ने कहा कि हमने जिंदगी भर जो कमाया था वह सब नष्ट हो गया अब कुबेर सिंह और परिवार के लोग शासन प्रशासन से घटना की जांच कर उचित सहायता मिलने की गुहार लगाते हुए आस में बैठे हैं।

भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी एवं विधायक भी पहुंचे श्रद्धांजलि

सारनी। भारतीय जनता पार्टी की पूर्व पार्षद एवं महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष को शनिवार आमला विधानसभा क्षेत्र के प्रत्याशी डॉक्टर योगेश पंडाग्रे के माध्यम से उनके निवास पर पहुंचकर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि देने का कार्य किया है। 16 अक्टूबर को उपचार के दौरान पूर्व भाजपा नेत्री भाग्यवती भादे का उपचार के दौरान नागपुर में देहांत हो गया था। जिनकी श्रद्धांजलि कार्यक्रम 28 अक्टूबर को उनके निवास स्थान पाथाखेड़ा में आयोजित की गई थी। यहां पर सुबह से लेकर दोपहर तक भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता पदाधिकारी यूनियन के अलावा समाज के लोगों ने दिव्यांगता भाग्यवती भादे को भाविनी श्रद्धांजलि देने का कार्य किया गया।आमला विधानसभा क्षेत्र के प्रत्याशी डॉक्टर योगेश पंडाग्रे ने श्रद्धांजलि देते हुए उपस्थित लोगों को

संबोधित करते हुए कहा कि पार्षद के कार्यकाल में उनका सराहनीय योगदान रहा है। महिलाओं को आत्मनिर्भर और लघु उद्योग से कैसे जोड़ा जा सकता है उसको लेकर भी इनके माध्यम से कई रचनात्मक कार्य करने का कार्य किया जा चुका है। उन्होंने कहा कि महिला मोर्चा की भाग्यवती भादे जिला अध्यक्ष एवं नगर पालिका परिषद सारनी में अध्यक्ष उपाध्यक्ष के महत्वपूर्ण पद पर रहकर जनहित के कई रचनात्मक कार्य उनके माध्यम से किया जा चुके हैं।

सारणी पुलिस ने निकाला फ्लैगमार्च

सारणी। आगामी विधानसभा चुनाव 2023 की तैयारी को दृष्टिगत रखते हुए सारणी पुलिस द्वारा श्रीमान पुलिस

अधीक्षक महोदय श्री सिद्धार्थ चौधरी, अतिरिक पुलिस अधीक्षक महोदय श्रीमती कमला जोशी के मार्गदर्शन में अनुविभागीय अधिकारी पुलिस श्री रोशन जैन के नेतृत्व में फ्लैग मार्च का आयोजन किया गया, फ्लैग मार्च कानून एवं व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने एवं आसामाजिक तत्वों में दहशत का माहौल एवम आमजनों में सुरक्षा की भावना उत्पन्न करने के लिए निकाला गया । फ्लैगमार्च कस्बा क्षेत्र सारणी,बगडोना, शोभापुर , घोड़ाडोंगरी पाथाखेड़ा में निकाला गया। उपरोक्त फ्लैग मार्च में थाना प्रभारी सारणी अरविन्द कुमरे,चौकी प्रभारी घोड़ाडोंगरी नरेंद्र उईके , चौकी प्रभारी पाथाखेड़ा एवं इकाई को एरिया डोमिनेशन के लिए प्राप्त आरपीएफ के बल सहित लगभग 80 अधिकारी कर्मचारी ने भाग लिया ।

किशोर बागड़ी बागड़ी लखेरा को जयपुर में राष्ट्र स्तरीय सुंदरलाल बहुगुणा समपर्ण समाज गौरव अवार्ड 2023 से सम्मानित किया

श्रवपुर। मानवता एवं परोपकार के लिए समर्पित समपर्ण संस्था जयपुर राजस्थान की ओर से दुर्गापुरा स्थित सियाम आडिटोरियम में 22 अक्टूबर रविवार को आयोजित समपर्ण समाज गौरव अवार्ड समारोह में देशभर से चयनित 57 विभुतियों को 15 श्रेणियों में राष्ट स्तरीय समपर्ण समाज गौरव 2023 एवं 18 युवा प्रतिभाओं को समपर्ण युवा जागृति 2023 अवार्ड से समाज में उनके द्वारा किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित किया गया , आयोजित समारोह में मध्य प्रदेश के नीमच जिले से समाज सेवा, स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवा कार्य करने वाले पर्यावरण मित्र श्री किशोर बागड़ी लखेरा को समपर्ण संस्था समारोह के मुख्य अतिथि पुलिस महानिदेशक (साईबर सेल) जयपुर राजस्थान द्वारा राष्ट स्तरीय ÷ सुन्दरलाल बहुगुणा समपर्ण समाज गौरव 2023 ÷ अवार्ड से सम्मानित किया गया , इस अवसर पर समारोह की अध्यक्षता कर रहे पुलिस महानिदेशक श्री रवि प्रकाश मेहरड़ा ने कहा कि महान व्यक्ति ही समाज में अच्छाई का एवं राष्ट निर्माण का विकास करते ह

राजस्थान विधानसभा चुनाव प्रक्रिया में राणावत भरेंगे 2 नवंबर को नामांकन

पुष्पांजलि टुडे संवाददाता नरेश कुमार सिरवी पाली राजस्थान

जवाली बाली। राजस्थान विधानसभा चुनाव को लेकर नामांकन प्रक्रिया सोमवार से शुरू हो गई है। बाली विधानसभा क्षेत्र हेतु भारतीय जनता पार्टी के मौजूदा विधायक व पूर्व मंत्री पुष्पेंद्र सिंह राणावत पर पार्टी ने छठी बार भरोसा जताते हुए पार्टी टिकट उन्हें दिया गया। विधायक पुष्पेंद्र सिंह राणावत 2 नवंबर 2023 दोपहर को अपना नामांकन दाखिल करेंगे ।मिडिया प्रमुख अमरपुरी दादाई ने बताया की इससे पुर्व सम्पूर्ण बाली विधानसभा क्षेत्र से भाजपा कार्यकर्ता अपने जोश जुनून के साथ हजारों की संख्या में कार्यकर्ता सुबह 11ज30 बजे ,बाली के किला मैदान में एकत्रित होकर वहां से उपखंड मुख्यालय पर पहुंचकर विधायक,व भारतीय जनता पार्टी बाली विधानसभा प्रत्याशी पुष्पेंद्र सिंह राणावत भारतीय जनता पार्टी से अपना नामांकन दाखिल करेंगे।

मक्का मदीना शरीफ उमराह जियारत के लिए हुए रवाना

पुष्पांजलि टुडे संवाददाता नरेश कुमार सिरवी पाली राजस्थान

चांचौडी कस्बे से मक्का मदीना शरीफ उमराह जियारत मुकदस सफर के लिये रवाना हुए गाजी खां,बरकत खां का मुस्लिम समाजबंधुओं ने माल्यार्पण कर इस्तकबाल किया ।सफर में ग्राम सहित और गावो से उमराह जियारत करने के लिए रवाना हुए इस मौके हाजी शरफुद्दीन अकबरी,मो.इलियास सिद्दीकी,वंजीर खां,हकीम खां,अब्दुल खां जलाल खा रजाक खा सहीत जमाअ त उपस्थित थे

थाना दबोह पुलिस एवं एस एस टी टीम ने चैकिंग के दौरान पकड़ी 07 लाख रूपये की चांदी,आचार संहिता में बड़ी कार्यवाही

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक पुष्पांजली टुडे

दबोह- श्रीमान पुलिस महानिरीक्षक महोदय चम्बल जोन,श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय भिण्ड श्री डॉ.आसित यादव एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक महोदय श्री संजीव पाठक के निर्देशन में आगामी विधान सभा चुनाव 2023 को दृष्टिगत रखते हुये आदर्श आचार संहिता के दौरान अवैध परिवहन पर कार्यवाही हेतु समस्त राजपत्रित अधिकारी एवं थाना प्रभारी एवं समस्त नाका प्रभारियों को निर्देशित किया गया था।इसी तारतम्य में अनुविभागीय अधिकारी पुलिस लहार श्री रविन्द्र विलवाल के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी दबोह निरीक्षक परमानंद शर्मा एवं उनकी टीम व स्स्ञ अधिकारी डॉ कुलदीप के द्वारा दिनाँक 31.09.23 को धौरका नाका पर चैकिंग के दौरान एक

अवैध शराब,मादक पदार्थ,अवैध नगदी व मूल्यवान धातुओं के व्यक्ति समथर तरफ से मोटर साईकिल पर पिट्ठू बैग लेकर आ रहा था।जिसकी रोक कर चैक किया गया तो उसके पिठु बैग में 9.758 कि.ग्राम चाँदी कीमती करीबन 17 लाख रूपये की रखी पाई गई बाद उसका नाम पता पूछा तो उसने अपना नाम रविकांत सोनी पुत्र चंन्द्रशेखर सोनी उम्र 32 साल निवासी महावीरपुरा थाना मौठ जिला झांसी उ.प्र.का होना बताया बाद मौके पर स्स्ञ प्रभारी डॉ कुलदीप के द्वारा समक्ष पंचान विधिवत जप्त कर जप्ति पंचनामा तैयार किया गया एवं जप्त सुदा चांदी को सुपुर्द एचसीएम कर जमा मालखाना रखबाई गई थी।

इनकी रही सराहनीय भूमिका- उक्त उल्लेखनीय कार्य में थाना प्रभारी दबोह निरीक्षक परमानंद शर्मा,स्स्ञ टीम प्रभारी डॉ कुलदीप,सउनि ओमकार सिंह तोमर,आर.743 सतेन्द्र सिंह थाना दबोह के द्वारा संयुक्त कार्यवाही की गई।

सकदडा आंगनवाड़ी केन्द्र पर मतदान करने की दिलाई शपथ

पुष्पांजलि टुडे संवाददाता नरेश कुमार सिरवी पाली राजस्थान

पाली राजस्थान साकदडा स्थित आंगनबाड़ी केंद्र पर मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान गर्भवती धात्री 0 से 6 वर्ष तक की माताओ एवं परिजनों ने भाग लिया। इस दौरान रंगोली बनाकर मतदान अवश्य करने की शपथ दिलाई। वही आंगनबाड़ी केंद्र पर दिए जाने वाले पोषाहार की गुणवत्ता के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ता दशरथ कवर। सहायिका रेखा कवर साथिन कविता मीणा ए एन एम पिंकू मीणा ग्रामीण गोविंद दास आदि मौजूद रहे।

राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर रन फॉर यूनिटी का आयोजन पुराने कलेक्टर परिसर से उत्कृष्ट विद्यालय तक किया गया

कलेक्टर कर्मवीर शर्मा , मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्रीमती ज्योति शर्मा के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में आयोजित रन फॉर यूनिटी को एसडीएम भास्कर गाचले ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया इस अवसर पर जिला शिक्षा अधिकारी शैलेंद्र कुमार कानूडे, वरिष्ठ उपंजीयक आरके असके ,सहायक संचालक जनजाति कार्य विभाग ए बी गुप्ता नीरज अमझरे सहित अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे रन फॉर यूनिटी के पूर्व एसडीएम भास्कर गाचले ने शासकीय और शासकीय विद्यालयों के 1000 से अधिक विद्यार्थियों एवं अधिकारियों ,कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई राष्ट्रीय एकता एवं मतदाता जागरूकता की तख्तियां हाथों में लिए विद्यार्थियों ने मतदाता जागरूकता एवं राष्ट्रीय एकता के नारे लगाए पूराने कलेक्टर परिसर से प्रारंभ होकर रन फॉर यूनिटी श्री कृष्णा टॉकीज तिराहा, पोस्ट ऑफिस चौराहा ,तिलक पथ होते हुए शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय के मैदान पर पहुंची जहां पर राष्ट्रगान के साथ समापन किया गया जिला शिक्षा अधिकारी शैलेंद्र कुमार कानुडे ने विद्यार्थियों को अधिकारीयो, कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता दिवस की शुभकामना भी दी इस अवसर पर प्रमुख रूप से हबीब बैग मिर्जा ,अश्विन गुप्ता, झबर सिंह मंडलोई , योगेश वाघ,निरंजन पाल, प्रदीप बडोले ,आफताब खान, कृष्णकांत नामदेव ,मुरली घोड़े शाहीद शेख रितेश जोशी आदि उपस्थित थे संचालन हबीब बैग मिर्जा ने किया एवं अंत में आभार अश्विन गुप्ता ने व्यक्त किया

भिंड कांग्रेस प्रत्याशी के चुनाव कार्यालय का उद्घाटन हुआ

जनता का आर्शीवाद और कार्यकर्ताओं का पूरा सहयोग मिल रहा है: चौ. राकेश चतुर्वेदी

पंकज त्रिपाठी
दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । भिंड कांग्रेस प्रत्याशी चौ. राकेश चतुर्वेदी का ग्वालियर रो?,इम्पीरियल होटल के पास चुनाव कार्यालय का उद्घाटन हुआ। कार्यक्रम के मुख्यातिथि मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी उपाध्यक्ष व जिला प्रभारी वासुदेव शर्मा रहे,उन्होंने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि सभी कार्यकर्ता एकजुट होकर कार्य करते हुए बूथों को अधिक से अधिक मजबूत करें, उन्होंने कहा कि कांग्रेस पाँचो सीटे जीत रही है और मध्यप्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनने वाली है।कांग्रेस प्रत्याशी चौ राकेश चतुर्वेदी ने संबोधित करते हुए कहा कि कार्यकर्ता किसी भी पार्टी की मूल ताकत होती है,और मुझे मेरे चुनाव प्रचार में कार्यकर्ताओं का पूरा सहयोग और जनता का आर्शीवाद मिल रहा है।श्री चतुर्वेदी ने कहा कि कांग्रेस की सरकार बनते ही प्रदेश की जनता को भारतीय जनता पार्टी के कुशासन से मुक्ति मिल जाएगी क्योंकि प्रदेश में कांग्रेस सुशासन लाएगी।

क्षत्रिय सिर्वी समाज कुक्षी द्वारा आयोजित द्वितीय प्रतिभा सम्मान समारोह संपन्न

समाज की विभिन्न प्रतिभाएं हुई सम्मानित

पुष्पाजंली टुडे

कुक्षी/मध्यप्रदेश क्षत्रिय सिर्वी समाज कुक्षी का द्वितीय प्रतिभा सम्मान समारोह शरद पूर्णिमा के पावन पर्व पर आई माताजी मंदिर परिसर में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत मां आईजी के पूजन के साथ हुई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अखिल भारतीय सिर्वी महासभा के प्रांतीय महासचिव एवं सिर्वी समाज कुक्षी अध्यक्ष कांतिलाल गेहलोत, प्रान्तीय शिक्षा सचिव नरेन्द्र सिर्वी सर, सिर्वी समाज उपाध्यक्ष कैलाश काग, कोषाध्यक्ष राजेश भायल, सचिव बाबूलाल हम्मड़ , महेश्वर ट्रस्ट उपाध्यक्ष राजेश राठौर, कोटवाल रमेश परिहार, कोठारी मोतीलाल काग, पूर्व अध्यक्ष गोमाजी सेप्टा, आईजी सेवा समिति अध्यक्ष कैलाश काग, जिला महासचिव प्रकाश भायल, रामायण मण्डल पूर्व अध्यक्ष मोहन राठौर,अंबिका तंदूरा भजन मंडल अध्यक्ष कैलाश हम्मड़, डॉक्टर चेतन सोलंकी मंचासीन थे। सिर्वी समाज कुक्षी के सानिध्य में कक्षा पांचवी के बीस, कक्षा आठवीं के आठ, कक्षा दसवीं के सोलह, कक्षा बारहवीं के आठ व अन्य क्षेत्र, नीट, एमबीबीएस, जेईई, डीएलएड, बीएड, एलएलबी, स्नातक, स्नाकोत्तर उपाधि, कंप्यूटर, बीफार्मा आदि परीक्षाओं में अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को शील्ड एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कक्षा पांचवी की प्रतिभाशाली बालिका सृष्टि काग, की माताजी व समाज की संगीता हम्मड़, एवं तरुणा भायल ने अपने विचार व्यक्त किये। समाज अध्यक्ष कांतिलाल गेहलोत ने अपने उद्बोधन में कहा कि जनवरी 2024 में प्रदेश स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह संपन्न होगा। जिसमें प्रदेश स्तरीय प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा। समाज में सनातन धार्मिक शिक्षा के साथ साथ विभिन्न खेलों में भी समाज के बच्चो को मार्गदर्शन देकर प्रोत्साहित किया जाएगा। प्रान्तीय शिक्षा सचिव नरेन्द्र सिर्वी सर ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में सिर्वी समाज निरंतर प्रगति कर रहा है।साल दर साल प्रतिभावान विद्यार्थियों की संख्या निरंतर बढ़ रही है साथ ही उच्च शिक्षा एवं प्रतियोगिता परीक्षा में भी सिर्वी समाज के प्रतिभावान विद्यार्थी निरंतर सफल हो रहे हैं। निश्चित रूप से समाज का भविष्य उज्जवल होगा। कार्यक्रम का संचालन प्रवेश हम्मड़, सुनील सेप्टा, रघु भायल ने किया एवं आभार युवा संगठन जिला महासचिव विशेष भायल ने माना।

भाजपा के शासन में ही विकास सम्भव-अम्बरीष शर्मा

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक पुष्पांजली टुडे

दबोह- भारतीय जनता पार्टी के शासन में ही क्षेत्र का बिकाश सम्भव है। उक्त बात लहार से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी अम्बरीष शर्मा ने अपने जन सम्पर्क के दौरान ग्रामीण जनों से कही उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में 2003 को याद कीजिये जब कांग्रेस की दिग्विजय की सरकार थी उस समय किसानों को न बिजली मिलती थी ओर न ही पानी मिलता था गाँव मे सड़के दिखाई नही देती थी। आम आदमी की जिंदगी बद से बदतर हो गई थी। उन्होंने ग्रामीणों से सबाल किया कि कांग्रेस की सरकार में आप लोग अपने खेतो रह सकते थे शाम होने से ही पहले अपने घर लौट आते थे क्योकि चारो तरफ डकैतों का डर रहता था पर आज क्षेत्र के किसानों को भरपूर बिजली मिल रही है किसान रात भर अपने खेत पर रहता है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में भाजपा की सरकार ने हर बर्ग के लिए काम किया है। अब किसी भी गाँव मे चले जाएं हर जगह सड़क,बिजली,पानी की सुविधा दिखाई देगी। आपका एक वोट लहार क्षेत्र की तकदीर,तस्वीर बदल सकता है। उन्होंने आगे कहा में विश्वास दिलाता हूं की में पाँच साल आपका बेटा बन कर काम करूंगा। भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशी अम्बरीष शर्मा आलमपुर मंडल के ज्ञानपुरा,मारपुरा,डूआ,पीपरी, छान,धौरका,जाखोली,अंधियारी, कसल,बड़ागांव,रिनिया,रायपुरा,परा, रतनपुरा, करीब एक दर्जन गाँव मे जनसम्पर्क किया।इनके साथ दबोह मंडल के नेताओ में भगवान नायक,शिवराज यादव,अंजनी कुरचानिया,केशव गुप्ता,राजेन्द्र उदेनिया,कप्तान सिंह कौरव,कल्याण सिंह कानूनगो,राजेन्द्र यादव,जसवंत दोहरे, शिवकुमार गोस्वामी,रविन्द्र खटीक,लालता कुशवाह, संजीव यादव,राममोहन मुदगिल,धर्मेंद्र कुरचानिया,मुन्ना यादव,आदि मौजूद रहे।

खरगोन पुलिस द्वारा अवैध कच्ची महुआ शराब का निर्माण करने वाले आरोपी के विरूद्ध बडी कार्यवाही

150 लीटर हाथ भट्टी महुआ शराब पुलिस द्वारा जप्त,300 लीटर महुआ लाहान किमती 30,000/- रूपये का नष्ट किया गया जप्तशुदा शराब की कुल कीमत 30,000/-

खरगोन जिले से मुन्ना खान
पुष्पांजलि टुडे

01 आरोपी गिरफ्तार

आगामी विधानसभा चुनाव को दृष्टिगत रखते हुए पुलिस महानिरीक्षक इंदौर जोन इन्दौर (ग्रामीण) श्री राकेश गुप्ता एवं उप पुलिस महानिरीक्षक निमाड रेंज खरगोन श्री चन्द्रशेखर सोलंकी द्वारा अवैध शराब बिक्री, निर्माण एवं परिवहन पर अंकुश लगाने हेतु निर्देशित किया गया था । उक्त निर्देशों के परिपालन में पुलिस अधीक्षक खरगोन श्री धर्मवीर सिंह व अति. पुलिस अधीक्षक (शहर) श्री तरूणेन्द्रसिंह बघेल, अति.पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) श्री मनोहरसिंह बारीया व समस्त अनुविभागीय अधिकारी पुलिस व थाना प्रभारियों को प्रभावी कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया । इसी तारतम्य मे थाना बे?िया पर पुलिस टीम द्वारा अवैध शराब निर्माण करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही की गई है ।

घटना का संक्षिप्त विवरण:- दिनांक 30.10.2023 को थाना बे?िया पर मुखबिर से सुचना प्राप्त हुई कि ग्राम पुनर्वास बकावा में खेत नाले के पास मे 02 व्यक्ति अवैध शराब की भट्टी मे शराब बनाकर आस पास के इलाको मे सप्लाय कर अवैध व्यवसाय कर रहे है । मुखबीर की सुचना पर तत्काल कार्यवाही करते हुए पुलिस टीम का गठन कर मुखबिर के बताये स्थान पर रवाना किया गया । पुलिस टीम के द्वारा मुखबिर के बताये स्थान पर पहुँच कर देखा गया, जहां 02 व्यक्ति नाले के किनारे 03 केन लेकर खडे दिखाई दिए जो पुलिस टीम को देखकर भागने लगे । पुलिस टीम द्वारा दोनों आरोपियों की घेराबंदी की गई जिसमे एक आरोपी अंधेरे का फायदा उठा कर भाग निकला व एक

आरोपी को पुलिस टीम ने पकड़ लिया- पुलिस टीम के द्वारा पकड़े गए आरोपी से उसका नाम पता पूछने पर उसने अपना नाम छगन पिता नुरा अजनारे जाति भील उम्र 45 वर्ष निवासी पुनर्वास बकावा का होना बताया । पकडे गये व्यक्ति के पास रखी 03 केन जिसमे प्रत्येक केन में 50 लीटर क्षमता कुल 150 लीटर कच्ची शराब किमती करीबन 30,000/- रुपये के जप्त की गई एवं आरोपी छगन की निशादेही से भट्टी के आस-पास झाडियो में में पुनर्वास बकावा का होना बताया । पकडे गये व्यक्ति के पास रखी 03 केन जिसमे प्रत्येक केन में 50 लीटर क्षमता कुल 150 लीटर 100 लीटर क्षमता के 3 ड्रमो मे करीब 300 लीटर महुआ लहान कीमती 30,000/- रुपये का नष्ट किया गया । पुलिस टीम के द्वारा थाना बे?िया पर दोनों आरोपियों के विरुद्ध अपराध क्र 366/23 धारा 34(2) आबकारी एक्ट पंजीबद्ध कर अनुसंधान मे लिया गया । फरार आरोपी चुन्नीलाल के विरूध्द पूर्व में अपराध क्रमांक 252/01.08.23 धारा 34 ए आबकारी एक्ट का पंजीबध्द है ।

गिरफ्तार आरोपियो के नाम -

1.छगन पिता नुरा अजनारे जाति भीलाला उम्र 45 वर्ष निवासी बकावा पुनर्वास

2.चुन्नीलाल पिता झेतरिया निवासी बकावा पुनर्वास (फरार आरोपी)

पुलिस टीम -

उक्त प्रकरण मे वरिष्ठ अधिकारियों व अनुविभागीय अधिकारी पुलिस अनुभाग बड़वाह श्रीमती अर्चना रावत के मार्गदर्शन व थाना प्रभारी श्री निर्मल कुमार श्रीवास के नेतृत्व उनि. शकुन्तला डोडवे, आर. 420 महिपाल, आर. 309 राजकुमार, आर. 887 लोकेन्द्र, आर. 850 राजीव गुर्जर, म.आर. 901 पुनम पाण्डे का विशेष योगदान रहा ।

प्रदेश के गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा के समक्ष कांग्रेस के पूर्व प्रदेश महासचिव भाजपा में शामिल

संदीप प्रधान पुष्पांजली टुडे

दतिया,। प्रदेश के गृह मंत्री व दतिया विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी डॉ. नरोत्तम मिश्रा के समक्ष मंगलवार को भारतीय जनता पार्टी की रीति, नीति से प्रभावित होकर कांग्रेस पार्टी के पूर्व प्रदेश महासचिव श्री अनिल भार्गव ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की है। दतिया विधानसभा के चुनाव कार्यालय में डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने पार्टी का अंग वस्त्र पहनाकर श्री अनिल भार्गव का स्वागत किया।

नेताओं का दल बदल जारी : पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष जसपाल सिंह अरोरा कांग्रेस में शामिल हुए

सन्नी महाजन ने थाम लिया भाजपा का दामन

रघुवर दयाल गोहिया

विधानसभा चुनाव से पहले जिले में नेताओं का दल बदल लगातार जारी है। भाजपा के बागी नेता सन्नी महाजन ने कुछ दिन पहले मुख्यमंत्री शिवराज सिंह की मौजूदगी में भाजपा की सदस्यता ग्रहण की थी। इसके बाद आज मंगलवार को पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष एवं पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष जसपाल सिंह अरोरा ने घर वापसी करते हुए कांग्रेस पार्टी ज्वाइन कर ली है। उन्होंने भोपाल पहुंचकर पीसीसी चीफ पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के समक्ष पार्टी ज्वाइन की। इस दौरान कमलनाथ ने कांग्रेस ज्वाइन कराते हुए श्री अरोरा की घर वापसी पर बधाई भी दी। गौरतलब है कि सोमवार को सीहोर विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी शशांक रमेश सक्सेना ने एतिहासिक नामांकन रैली निकाली थी। इस रैली को अभी तक की सबसे बड़ी रैली माना जा रहा है। इसके पहले भाजपा प्रत्याशी सुदेश राय ने भी नामांकन रैली निकाल कर अपनी ताकत दिखाई थी। इस रैली में जसपाल अरोरा शामिल नहीं

हुए थे। अवसर पर जसपाल सिंह अरोरा ने कहा कि वे भी अपनी घर वापसी पर प्रसन्न हैं और अब फिर से पार्टी संगठन को मजबूती देने के लिए मैदान संभालेंगे। इस दौरान उन्होंने सीहोर विधानसभा सीट से कांग्रेस की जीत के प्रति भी आश्वस्त किया। जसपाल सिंह अरोरा सीहोर विधानसभा सीट से भाजपा में टिकट के प्रबल दावेदार थे, सर्वे में भी नाम था, लेकिन भाजपा ने उन्हें टिकट नहीं दिया। इसके बाद से ही नाराज भी थे एवं मंथन भी कर रहे थे। आखिरकार उन्होंने अब घर वापसी का मूड बनाकर कांग्रेस पार्टी का दामन थाम लिया है। श्री अरोरा के कांग्रेस में जाने से जहां कांग्रेस पार्टी को मजबूती मिलेगी, वहीं भाजपा के लिए राह कठिन भी हो जाएगी। वरिष्ठ नेता जसपाल सिंह अरोरा ने अपनी राजनीति की शुरूआत कांग्रेस पार्टी से की थी। वे लंबे समय तक कांग्रेस में रहे। इस दौरान यूथ कांग्रेस के जिलाध्यक्ष भी बने। संगठन में भी कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे। वे वर्ष 1999 से 2004 तक जिला पंचायत के अध्यक्ष भी रहे। हालांकि

उन्होंने वर्ष 2003 में भाजपा का दामन थाम लिया था और तभी से वे भाजपा के एक सच्चे सेवक के तौर पर पार्टी, संगठन में काम कर रहे थे। उनकी धर्मपत्नी अमीता अरोरा भी नगर पालिका परिषद सीहोर की अध्यक्ष रहीं हैं। उनके कार्यकाल में भी नगर को कई सौगातें मिली। जसपाल सिंह अरोरा मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के काफी करीबी रहे हैं। और उन्हीं के कहने पर उन्होंने कांग्रेस पार्टी छोड़कर भाजपा का दामन थामा था, तब से ही वे शिवराज सिंह चौहान के साथ पार्टी में काम कर रहे थे। सीहोर विधानसभा क्षेत्र में उनका खासा वर्चस्व रहा है और वे इस बार भाजपा से टिकट के प्रबल दावेदार भी थे, लेकिन पार्टी ने उन्हें टिकट नहीं दिया। अब वे कांग्रेस पार्टी के साथ में चुनाव की कमान संभालेंगे। कांग्रेस ज्वाइन करते समय जिला कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. बलबीर तोमर, पूर्व विधायक रमेश सक्सेना, राजाराम बड़े भाई, आशीष गहलोत, राजेंद्र ठाकुर आदि सहित बड़ी संख्या में वरिष्ठ कांग्रेसजन उपस्थित थे।

संपादकीय

विफल हो चुका है संयुक्त राष्ट्र

इजराइल–हमास युद्ध में 8000 से अधिक लोग मारे जा चुके हैं। गाजा पट्टी में घमासान मचा हुआ है। दुनिया भर में विश्व युद्ध शुरू होने का कोहराम मचा हुआ है। रूस–यूक्रेन युद्ध थमने का नाम नहीं ले रहा। बच्चे, वृद्ध, महिलाएं और युवा मारे जा रहे हैं या फिर असहाय दिखाई देते हैं। युद्धों को रोकने के लिए कोई गम्भीर प्रयास नहीं हो रहे। सब एक–दूसरे को विध्वंसक हथियार बेच रहे हैं। मानवता चारों तरफ कराह रही है। संयुक्त राष्ट्र अपनी प्रांसगिकता पूरी तरह खो चुका है। मानवता का ढिंढोरा पीटने वाली बड़ी शक्तियां खेमे में बंट चुकी हैं। अब सवाल यह है कि आज की दुनिया में संयुक्त राष्ट्र जैसी विफल संस्था की कोई जरूरत है।–शांति मनुष्य का स्वभाव है।–लड़ना और हिंसा करना उसकी बाध्यता है।–भूलता वह विचारशील प्राणी है।–हर बार उसने युद्धों से सीख कर शांति की तलाश आरम्भ की है।–शांति ही मनुष्य की अपनी निजता है।यह वृति आज भी बनी हुई है लेकिन युद्ध आज भी होते हैं। युद्धों का स्वरूप पहले से कहीं अधिक खतरनाक हो चला है। यह बात सत्य है कि प्रथम विश्व युद्ध के उपरांत लीग ऑफ नेशन्स की कार्यशैली की असफलता के बाद सारी दुनिया में यह महसूस किया गया कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति प्रसार और सुरक्षा की नीति तक ही सफल हो सकती है। जब विश्व के सारे देश अपने निजी स्वार्थों से उठकर सम्पूर्ण विश्व को एक इकाई समझ कर अपनी सोच को विकसित करें। इसके बाद संयुक्त राष्ट्र अस्तित्व में आया। तब इसके पांच स्थाई सदस्य बन गए (चीन, फ्रांस, सोवियत संघ (अब रूस), घब्रिटेन और अमेरिका। सोवियत संघ के विखंडन के बाद अब रूस सुरक्षा परिषद का स्थाई सदस्य है। मैं इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता कि ऐसे लोग भी पृथ्वी पर हो सकते हैं जो निर्दोष और बच्चों के शवों को देखकर भी ठहाके लगा सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र का एक ही मकसद था विश्व शांति। क्या यह संस्था विश्व शांति कायम करने में जरा भी सफल रही। अमेरिका पर 9៨11 हमले के बाद अमेरिका को अहसास हुआ कि जेहादी फंडामेंटलिज्म का खतरा पैदा हो चुका है। युद्ध उन्माद में उसने पूरे विश्व में से आतंकवाद को खत्म करने का संकल्प लिया और अफगानिस्तान में विध्वंसक खेल खेला। अमेरिका ने रासायनिक हथियारों की खोज के नाम पर इराक में खूनी खेल खेला और सद्दाम हुसैन का तख्ता पलट कर दिया। अमेरिका ने लीबिया और कई अन्य देशों में भी ऐसा ही किया। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की कठपुतली बनकर रह गया। अफगानिस्तान पर हमले के लिए अमेरिका ने उस पाकिस्तान को अपना साथी बनाया जिसने जिहाद को हर तरह से सींचा। सद्दाम ने तो अमेरिका पर कोई हमला नहीं किया था न ही वह सोच सकता था तो फिर अमेरिका ने इराक पर हमला क्यों किया। कौन नहीं जानता कि अमेरिका का असली मकसद इराक और कुवैत के तेल कुंओं पर नियंत्रण करना था। संयुक्त राष्ट्र के और भी कई लक्ष्य हैं जैसे विश्व आतंकवाद और परमाणु निशस्त्रीकरण इत्यादि। जब परमाणु अप्रसार संधि की बात चली तो वैश्विक शक्तियों ने भेदभावपूर्ण नीति अपनाई। बड़ी शक्तियों ने तो खुद के पास परमाणु हथियार रखने की बात कही और दूसरों को परमाणु हथियार तबाह करने का उपदेश दिया। संयुक्त राष्ट्र ने अनेक प्रस्ताव पारित किए। आवाज भी उठाई परन्तु वह एक ज्व्ज्भ्स्रै ज्व्ळम्त अर्थात दंतहीन सिंह ही साबित हुआ। भारत को संयुक्त राष्ट्र का कड़वा अनुभव है। पंडित नेहरू कश्मीर मसले को संयुक्त राष्ट्र में इसलिए ले गए थे ताकि वह हमारे हक में ठोस फैसला दे। संयुक्त राष्ट्र की प्रासंगिकता हम मानते जब वह मात्र महाराजा हरिसिंह द्वारा हस्तांरित जम्मू–कश्मीर के भारत में विलय के पत्र के आधार पर 'लोहदंड' का इस्तेमाल कर पाकिस्तान को वहां से जाने को मजबूर कर देता। संयुक्त राष्ट्र संघ ने उस समय भी दोहरी नीति अपनाई। तब से लेकर आज तक कश्मीर मसले पर पाकिस्तान का चरित्र नहीं बदला। भारत कई वर्षों से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का दावा कर रहा है। न तो सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्यों का विस्तार किया गया है और न ही इसमें व्यापक सुधार किए गए हैं। संयुक्त राष्ट्र की विफलता का सबसे बड़ा कारण यह भी है कि वह अमेरिका की जेबी संस्था बनकर रह गया है। भारत आज वैश्विक आर्थिक ताकत बन चुका है। अमेरिका और रूस के बाद भारत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में महारत हासिल कर चुका है। वह दुनिया में तेजी से विकास करने वाली अर्थव्यवस्था बन चुका है। अब ऐसा लगता है कि सुरक्षा परिषद की सदस्यता लेने का कोई फायदा भी नहीं रहा। भारत ने स्वयं इतनी शक्ति का संचय कर लिया है कि आज पूरी दुनिया भारत की ओर उम्मीद भरी नजरों से देख रही है। भारत को पूरे विश्व में यह बात स्पष्ट कर देनी होगी कि हमें सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता मंजूर नहीं। अगर सुरक्षा परिषद की सदस्यता चाहिए तो केवल वीटो शक्ति के साथ। यह भी कितना दुखद है कि सुरक्षा परिषद आज तक आतंकवाद की परिभाषा तय नहीं कर पाया तो उससे और क्या उम्मीद की जा सकती है।

चुनाव आयोग व आचार संहिता

आदित्य नारायण

भारत की तेल कंपनियों ने रूस से सस्ता तेल खरीदकर यूरोपीय देशों को तेल निर्यात किया है। चीन तो पहले से ही रूस से तेल खरीद रहा है अब पाकिस्तान ने भी रूस से तेल खरीदना शुरू कर दिया है। ऊर्जा संकट में यूरोपीय देशों के लिए भारत देवदूत बनकर उभरा है।

भारत के चुनाव आयोग और चुनाव प्रणाली की दुनिया के सभी लोकतान्त्रिक देशों में बहुत ऊंची प्रतिष्ठा है और स्थिति यह है कि विश्व के बहुत से देश इसका अध्ययन करने अपने प्रतिनिधि दल नई दिल्ली हर वर्ष भेजते रहते हैं। इसका कारण एक ही है कि भारत का चुनाव आयोग ऐसी संवैधानिक और स्वतन्त्र संस्था है जिसे हमारे संविधान निर्माताओं ने सरकार का अंग नहीं बनाया और इसकी सत्ता इस प्रकार स्वायत्त व स्वतन्त्र रखी कि यह देश की समूची राजनैतिक प्रणाली का इस प्रकार नियामक बन सके कि किसी भी पार्टी को अपनी राजनैतिक गतिविधियां जारी रखने के लिए इसके प्रति सीधे जवाबदेह होना पड़े। चूंकि भारत की प्रशासनिक व्यवस्था अन्ततः राजनैतिक दलों द्वारा ही संचालित होती है तो यह जरूरी समझा गया कि राजनैतिक दलों की संविधान व संविधान सम्मत संस्था के प्रति जिम्मेदारी मुकर्रर की जाये। इसके साथ ही चुनाव आयोग को भारत में लोकतन्त्र की आधार भूमि तैयार करने के लिए जिम्मेदार बनाया गया और इसे दायित्व दिया गया कि चुनाव कराते वक्त इसे सभी राजनैतिक दलों को बराबर व एक समान वातावरण देना होगा और सभी दलों के साथ एक समान व्यवहार करना होगा। संविधान में बाकायदा इसकी व्यवस्था जन प्रतिनिधित्व अधिनियम–1951 के तहत की गई। चुनाव आयोग ने चुनाव कराने के लिए जिस आचार संहिता बनाने का काम किया उसमें भी यह ध्यान रखा गया कि किसी भी सत्तारूढ़ दल और विपक्षी दल के लिए हर हालत में परिस्थितियां अलग–अलग न हों और वे हर दृष्टि से एक समान हों। इसी वजह से आचार संहिता लागू होते ही किसी भी प्रदेश या देश की सम्पूर्ण प्रशासन व्यवस्था का इसे संरक्षक बनाने की व्यवस्था की गई। किसी भी राज्य या देश में चुनावों के समय सत्ता पर काबिज किसी भी दल की सरकारें केवल रोजमर्रा के काम चलाने के ही अख्तियारों से लैस जरूर रहेंगी मगर कोई नीतिगत निर्णय लेने से उन पर रोक लगा दी गई। जहां तक देश की सरकार का प्रश्न है तो लोकसभा चुनावों के समय यह शर्त उस पर भी लागू रहेगी मगर किसी राष्ट्रीय आपदा के समय देश हित में उसे निर्णय लेने का अधिकार होगा क्योंकि भारत में बिना सचेत प्रधानमन्त्री के एक क्षण भी सरकार नहीं रह सकती है। अतः चुनावों के समय भारत में किसी तटस्थ सरकार की कभी जरूरत ही नहीं पड़ती है क्योंकि इसकी व्यवस्था चुनाव आयोग को प्रशासन का संरक्षक बना कर संविधान में पहले से ही कर दी गई है। भारत की चुनाव प्रणाली की एक और खासियत है कि चुनावों के समय यह एक दूसरी स्वतन्त्र व स्वायत्त संस्था न्यायपालिका का भी चुनावों के मामले सीधे दखल नकार देती है। भारत के संविधान निर्माताओं ने न्यायपालिका को भी सरकार का अंग नहीं बनाया और इसे पूरी तरह निष्पक्ष रहने व देश में संविधान का शासन देखने की जिम्मेदारी सौंपी है। चुनाव आयोग चूंकि एक संवैधानिक संस्था है और राजनैतिक दलों के मामले में इसके पास अर्ध न्यायिक अधिकार भी है अतः चुनाव आचार संहिता लागू होने के बाद सर्वोच्च न्यायालय भी चुनाव सम्बन्धी सभी विवादों से स्वयं को दूर कर लेता है । मगर चुनाव आयोग सभी राजनैतिक दलों के लिए एक समान वातावरण व परिस्थितियां देने के लिए संविधानतः बंधा हुआ है अतः उसे देखना होता है कि किसी भी हालत में ऐसे समय में सत्ता पर काबिज किसी भी दल की सरकार अपने किसी भी विरोधी दल के प्रति कोई दुर्भावनापूर्ण कार्रवाई न कर सके। यह सवाल इतना व्यापक है कि इसकी समीक्षा अभी तक करने की जरूरत नहीं समझी गई। इसका कारण यह भी रहा कि कभी ऐसे हालात पैदा ही नहीं हुए जिनका चुनावों के दौरान इलाज चुनाव आयोग ने न किया हो। इसके साथ यह मुद्दा भी जुड़ जाता है कि चुनाव आचार संहिता के दायरे में कौन–कौन सी कार्रवाइयां आती हैं। सवाल यह भी बहुत महत्वपूर्ण है कि जब किसी राज्य में चुनाव हो रहे हैं तो केन्द्र की जांच एजेंसियां क्या चुनाव आचार संहिता से बाहर रहती हैं। इसका कानूनी जवाब हमें यह मिलता है कि केन्द्रीय जांच एजेंसियों पर चुनाव आचार संहिता लागू नहीं होती क्योंकि उनका काम निष्पक्ष तरीके से किसी भी मामले की जांच करना होता है और उनके किसी भी कार्य में राजनैतिक दखलन्दाजी नहीं हो सकती। इन एजेंसियों की स्थिति बेशक संवैधानिक नहीं होती मगर ये वैधानिक होती हैं जो संसद इन्हें कानून बना कर प्रदान करती है। ये एजेंसियां चुनाव आयोग के दायरे में चुनाव आचार संहिता लागू होने के बावजूद नहीं आतीं। देश में अधिकतर स्वतन्त्र जांच एजेंसियों का गठन संविधान लागू होने के बहुत अर्से बाद ही किया गया है और समकालीन समय की चुनौतियों को देखते हुए ही किया गया है। जिस प्रकार 1963 में पं. जवाहर लाल नेहरू ने सीबीआई का गठन किया था। मगर चुनावों के समय सभी राजनैतिक दलों को एक समान राजनैतिक वातावरण देने के दायित्व से चुनाव आयोग बंधा होता है। इसे देखते हुए कुछ विधि विशेषज्ञों की राय में यह मामला न्यायिक समीक्षा का मुद्दा बनता है। राजनैतिक दल गत प्रशासनिक प्रणाली में विभिन्न दलों के बीच आरोप– प्रत्यारोप लगना सामान्य चुनावी प्रसंग माना जाता है परन्तु इसमें भी चुनाव आयोग को सत्तारूढ़ दल व विपक्षी दल का विभेद किये बिना अपना रुख पूरी तरह स्वतन्त्र न केवल रखना होता है बल्कि दिखना भी होता है क्योंकि भारत में चुनावों के परिणाम अवधारणा के आर–पार आते हैं। इस मामले में चुनाव आयोग को भी अपने बारे में बनने वाली जन अवधारणा का ध्यान रखना होता है। यह जन अवधारणा भारत के लोकतन्त्र की शुचिता से सीधे जुड़ी होती है।

जानलेवा वायु प्रदूषण, सरकार और जनमानस

प्रेम शर्मा

बरसात समाप्ति के साथ ही उत्तर भारत के साथ मध्य भारत भी वायु प्रदूषण की चपेट में आ गया है। क्या दिल्ली, मुंबई सहित कई शहर वायु प्रदूषण की गिरफ्त में है। केंद्र और राज्य सरकारों के तमाम दावों के बाद भी हर वर्ष ठंड शुरू होते ही देश के एक बड़े हिस्से में वायु प्रदूषण एक गंभीर संकट का रूप ले लेता है। चूंकि ऐसा वर्षों से होता चला आ रहा है, इसलिए इस नतीजे पर पहुंचने के अलावा और कोई चारा नहीं कि वायु प्रदूषण के कारणों का निवारण करने के मामले में केवल कोरे वादे किए जा रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की 2019 की रिपोर्ट के अनुयार देश के 99.5 प्रतिशत जिलों में हवा खराब है। लेकिन केन्द्र ओर राज्य सरकार ने अब तक इससे निपटने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठा पाई है। दूसरी तरफ वायु प्रतिवर्ष विकराल रूप धारण करता जा रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व के 50 सबसे प्रदूषित शहरों में 39 शहर हमारे देश से हैं। इनमें 20 शहर उत्तर प्रदेश के हैं। केंद्र की आईएमडी विभाग की वेबसाइट से पता चलता है कि दिल्ली में 70 फीसदी प्रदूषण बाहरी राज्यों से आ रहा हैं। इसको लेकर दिल्ली की आप सरकार ने बाहरी राज्यों से दिल्ली में आ रहे प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए आवाज उठाई तो केंद्र ने उस वेबसाइट पर आंकड़े देने बंद कर दिए। केजरीवाल सरकार ने उत्तर भारत के सभी राज्यों के पर्यावरण मंत्रियों की एक उच्चस्तरीय मीटिंग बुलाई जाए और सफर वेबसाइट पर आंकड़े देना शुरू किया जाए। आकड़ो के मुताबिक एनसीआर में 2000 ईंट के भट्ठे हैं जो पुरानी तकनीक से चल रहे हैं। उसमें से 150 भट्ठे गाजियाबाद व 250 मुजफ्फरनगर में हैं। इनका धुआं दिल्ली में आता है। एनजीटी ने आर्डर पास किया कि सभी इंडस्ट्रीज को स्वच्छ ईंधन यानी कि पीएनजी पर चलाया जाए। वैश्विक रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि दिल्ली में वाष्पों का हानिकारक मिश्रण यहाँ के निवासियों की जीवन प्रत्याशा से लगभग 12 वर्ष की कटौती कर रहा है। यह प्रशासनिक उदासीनता की एक भयावह तस्वीर पेश करता है जिसके कारण साल दर साल वायु की गुणवत्ता बिगड़ती जा रही है और स्टॉप–गैप उपायों के साथ केवल तभी हस्तक्षेप किया जाता है जब साँस लेना सचमुच अत्यंत कठिन हो जाता है। शिकागो विश्वविद्यालय के ऊर्जा नीति संस्थान की वायु गुणवत्ता जीवन सूचकांक 2023 रिपोर्ट में पाया गया कि दिल्ली, नोएडा और गुरुग्राम का प्रदर्शन वैश्विक स्तर पर सबसे बदतर रहा। भारत में, उत्तरी मैदान जहाँ देश की लगभग 40 प्रतिशत आबादी निवास करती है वहा का वायु प्रदर्शन सबसे खराब पाया गया,जहाँ प्रदूषण के कारण औसत निवासी की जीवन प्रत्याशा लगभग आठ वर्ष कम हो जाती है। वायुमंडल में ऐसे पदार्थों की उपस्थिति के कारण घटित वायु दूषण या संक्रमण्की स्थिति है जो मनुष्यों और अन्य जीवित प्राणियों के स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है अथवा जलवायु या अन्य पदार्थों को क्षति पहुँचाता है। पार्टिकुलेट मैटर यानि की ये छोटे ठोस या तरल कण होते हैं जो वायु में निलंबित स्थिति में पाए जाते हैं। वे धूल, परागकण और ज्वालामुखी विस्फोट जैसे प्राकृतिक स्रोतों से अथवा जीवाश्म ईंधन, लकड़ी एवं अपशिष्ट के दहन जैसी मानवीय गतिविधियों से अथवा खनन, निर्माण एवं कृषि जैसी औद्योगिक प्रक्रियाओं से उत्पन्न होते हैं। पीएम 2 और पीएम 10 से अधिक खतरनाक है क्योंकि यह फेफड़ों एवं रक्तप्रवाह में गहराई तक प्रवेश कर सकता है और कहीं अधिक स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा कर सकता है। ओजोन ओ 3 ऐसी गैस है जो तब बनती है जब सूर्य की किरणें वायु में नाइट्रोजन ऑक्साइड और वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों के साथ प्रतिक्रिया करती हैं।ओजोन लाभदायक या हानिकारक हो सकती है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि यह वायुमंडल में कहाँ मौजूद है।समताप मंडल में उपस्थित ओजोन पृथ्वी को सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी किरणों से बचाती है।हालाँकि, क्षोभमंडल में यह एक प्रदूषक है जो आँख, नाक एवं गले में जलन पैदा कर सकता है, फेफड़ों को क्षति पहुँचा सकता है और श्वसन संबंधी रोगों का कारण बन सकता है।नाइट्रोजन डाइऑक्साइड (छव्2)रू यह एक गैस है जिसका निर्माण तब होता है जब नाइट्रोजन ऑक्साइड वायु में उपस्थित ऑक्सीजन के साथ प्रतिक्रिया करती है। इसके अलावा वायु मण्डल में एनओएक्स मोटर वाहनों, बिजली संयंत्रों और औद्योगिक बॉयलरों जैसी दहन प्रक्रियाओं से उत्सर्जित होती है। जिससे खांसी, घरघराहट और साँस लेने में कठिनाई पैदा कर सकती है और संक्रमण एवं एलर्जी का खतरा बढ़ा सकती है। इसके अलावा कार्बन मोनोऑक्साइड एक रंगहीन, गंधहीन गैस है जो गैसोलीन, डीजल, कोयला, लकड़ी और चारकोल जैसे कार्बन–युक्त ईंधन के अपूर्ण दहन से उत्पन्न होती है। इसके कारण शरीर के अंगों और ऊतकों, विशेषकर हृदय एवं मस्तिष्क तक पहुँचने वाली ऑक्सीजन की मात्रा को कम कर सकती है।इसके उच्च स्तर से संपर्क सिरदर्द, चक्कर आना, मतली, थकान, भ्रम और यहाँ तक कि मृत्यु का भी कारण बन सकता है। इसके साथ ही वायु मण्डल में सल्फर डाइऑक्साइड स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होने के साथ ही कार्बन डाइऑक्साइड एवं मीथेन जैसी अन्य ग्रीनहाउस गैसों के साथ अंतःक्रिया करता है और उनके वार्मिंग प्रभाव को बढ़ा देता है। ग्रीनपीस इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 287 कोयला–आधारित तापीय बिजली संयंत्रों में से 139 वर्ष 2019 में पर्यावरण मंत्रालय द्वारा निर्धारित उत्सर्जन मानदंडों का उल्लंघन कर रहे थे। ये संयंत्र सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, सीसा, पारा और टव्ब्े उत्सर्जित करते हैं, जो अम्लीय वर्षा, स्मॉग, जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकते हैं। देश में कोयला, तेल या प्राकृतिक गैस का ईंधन के रूप में उपयोग करने वाले बिजली संयंत्र, कारखाने और घर भी ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कर वायु प्रदूषण में योगदान करते हैं। विश्व बैंक समूह के अनुसार, चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद भारत विश्व में सीओ टू का तीसरा सबसे बड़ा उत्सर्जक है।फसल अवशेष या पराली दहन, उर्वरकों एवं कीटनाशकों का उपयोग और पशुधन पालन जैसी कृषि संबंधी गतिविधियाँ भी भारत में वायु प्रदूषण का कारण बनती हैं।विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 800 मिलियन से अधिक लोग रसोई के लिये ठोस ईंधन पर निर्भर हैं। ये ईंधन कोयले की तुलना में पाँच गुना अधिक सांद्रता में धुआँ और इनडोर वायु प्रदूषक पैदा करते हैं। ये प्रदूषक आँखों में जलन, फेफड़ों में संक्रमण, क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज और समयपूर्व मौत का कारण बन सकते हैं। कूड़ा–कचरा जलानारू भारत में बहुत से लोग अपने घरेलू कूड़े–कचरे को खुली जगहों पर जलाकर उसका निपटान करते हैं। यह अभ्यास हवा में जहरीले रसायन और डाइऑक्सिन छोड़ता है, जो कैंसर और अन्य बीमारियों का कारण बन सकता है।'द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट' के एक अध्ययन के अनुसार, सर्दियों के मौसम के दौरान दिल्ली के पीएम 10 सांद्रता में अपशिष्ट दहन का योगदान 29 प्रतिशत था। अपशिष्ट दहन से ब्लैक कार्बन भी उत्सर्जित होता है, जो एक अल्पकालिक जलवायु प्रदूषक है और यह ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ा सकता है।गाय और भैंस जैसे जुगाली करने वाले पशुओं की पाचन प्रक्रियाओं से मीथेन का उत्सर्जन ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में एक उल्लेखनीय योगदानकर्ता है। 100 वर्ष की अवधि में मीथेन की ग्लोबल वार्मिंग क्षमता कार्बन डाइऑक्साइड की तुलना में 28 गुना अधिक होती है।इसके अतिरिक्त, पशुओं के अपशिष्ट और शवों के अपघटन से अमोनिया, हाइड्रोजन सल्फाइड और वाष्पशील कार्बनिक यौगिक जैसे प्रदूषक निकलते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत का बूचड़ उद्योग प्रति वर्ष लगभग 2.7 मिलियन टन ठोस अपशिष्ट और 3.6 बिलियन लीटर अपशिष्ट जल उत्पन्न करता है। बहरहाल मानव जीवन के लिए हानिकाकरक गैस सल्फर डाईआक्साइड़, कार्बन डॉईआक्साइड़, मोनो ऑक्साइड़, नाईट्रोजन ऑक्साइड़, टाई ऑक्साइड़, क्लोरोफ्लो कार्बन और अस्थिर कार्बन योगिक की ऐसी तमाम रिपोर्ट और आकड़े है जो इस बात का प्रमाण है कि देश में वायु प्रदूषण जानलेवा होता जा रहा है। वायु प्रदूषण से हजारों जाने जा रही है लेकिन राज्य और केन्द्र सरकार इस दिशा में कोई ठोस कदम नही उठा रही है। देश में बुनियादी आजीविका से जुड़े मुद्दे प्रायः चुनावी आख्यान पर हावी रहते हैं, जिससे कार्यकारी को प्रदूषण के मोर्चे पर संवीक्षा से बचने का अवसर मिल जाता है। लेकिन कोई भी देश अपने नागरिकों के स्वास्थ्य की चिंता किये बिना आर्थिक रूप से प्रगति नहीं कर पाया है।

जीवन मे जिजीविषा और संघर्ष सफलता के उत्तम मार्ग

संजीव ठाकुर

मन के जीते जीत है मन के हारे हार। निरंतर जिजीविषा और संयम के साथ संघर्ष हर बड़ी जीत और सफलता के उत्तम मार्ग हैं। निराशा से बढ़कर कोई अवरोध नहीं अतः निराशा, हताशा को त्यागें और ऊर्जा उत्साह के साथ आगे बढ़े, सफलता आपके कदमों पर होगी। हर बड़ा व्यक्ति जो हमें समाज से अलग हटकर खड़ा दिखाई देता हैस जिसे हम विलक्षण मानते और प्रतिभा संपन्न मानते हैं और आज के संदर्भ में हम उसे सेलिब्रिटी कहते हैं तो निसंदेह उसकी इस सफलता के पीछे अनवरत श्रम, अदम्य मानसिक शक्ति और संयम छुपा होता हैस बड़ी सफलता प्राप्त करने का कोई सरल उपाय या शॉर्टकट नहीं होता है। विपरीत परिस्थितियों में मनुष्य की मानसिक दृढ़ता एवं संकल्पित कठिन श्रम ही सफलता के रास्ते खोलते हैं।यूं तो हर इंसान के जीवन में विशेषताएं, मान्यताएं, प्रतिबद्धताओं और आकांक्षाएं होती हैंस सभी लोग मूलभूत आवश्यकताओं के साथ साथ सामाजिकता , प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा जैसी उच्च स्तरीय आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहते हैंस मानव की स्वाभाविक और अदम्य इच्छा की पूर्ति के संपूर्ण जीवन और उसके अस्तित्व के लिए अत्यंत आवश्यक है किंतु व्यक्ति की इच्छा,आकांक्षा सफलता उस उसके मूल्यों,सिद्धांतों और आदर्शों की कीमत पर कतई नहीं होनी चाहिए स यदि व्यक्ति की आकांक्षा,सफलता और इच्छा उसकी अदम्य इच्छा, भूख और मूल्यों को समाविष्ट ना करते हुए दूसरी दिशा में जाती हो तो ऐसे में उसकी सफलता पूरे मानव समाज और मानवता के लिए संकट का कारण भी बन सकती हैस जिस तरह एक वैज्ञानिक मेहनत, लगन, प्रयोगशाला में मानवी संविधान मूल्यों से ओतप्रोत मानव कल्याण के उपकरण न बनाकर जैविक व रासायनिक हथियार बनाकर व्यापक नरसंहार जैसे अमानवीय अविष्कार को मूर्त रूप दे, तो यह समाज के लिए खतरनाक हो सकता हैस यही वजह है की सफलता का नक्शा और इच्छा के पीछे माननीय मूल्यों का होना अत्यंत आवश्यक भी है। मूल्य, सिद्धांत और नैतिकता जीवन के लक्ष्य और उसके क्रियान्वयन में सर्वाधिक संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैंस सफलता की धारणा केवल स्थापित मापदंड न होकर मानवीय मूल्यों से जुड़ा होकर मानव कल्याण के लिए भी होना चाहिएसइसमें कोई संदेह नहीं की विश्व भर की सभी सभ्यताओं, संस्कृतियों और धर्मों में अहिंसा, सत्य ,करुणा, सेवा, दया और विश्व बंधुत्व की भावना की निर्विवाद उपस्थिति दिखाई देती हैस और वैश्विक विकास की अवधारणा भी इन्हीं बिंदुओं पर रखकर तय की जाती हैस भारत में प्राचीन काल से ही मूल्यों की प्रतिबद्धता की परंपरा चली आ रही हैसऋषि–मुनियों ने तो यहां तक कहा है कि जिसका चरित्र तथा माननीय आदर्श चला गया वह व्यक्ति, मृतक लाश की तरह हो जाता है। भारतीय संस्कृति में आदर्शों तथा मूल्य के पोषक उदाहरणों की अंतहीन सूची है जिनमें कबीर, रैदास, संत,ज्ञानेश्वर तुकाराम,मोइनुद्दीन चिश्ती, निजामुद्दीन औलिया, रहीम,खुसरो, गांधी,नेहरू, टैगोर, सुभाष, विवेकानंद जैसे महान लोग सिद्धांतों की प्रतिबद्धता को अपने जीवन की सफलता मानकर अपने जीवन को समाज को सौंप दिया था।परिणाम स्वरूप व्यक्ति को महज सफलता का पुजारी ना बन कर मूल्यों के प्रति प्रतिबंध होने का प्रयास करना चाहिए। ताकि तनिक सफलता के स्थान पर चिरस्थाई एवं समाज उपयोगी सफलता प्राप्त हो सके। वर्तमान में यह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है कि व्यक्ति स्वाद तथा सफलता के लिए अक्सर अपने मूल्यों को तिलांजलि दे देता है। वर्तमान सुख एवं लालच चिरस्थाई सफलता के सामने महत्वपूर्ण एवं प्राथमिक हो जाता है ।आज मनुष्य तत्काल एवं अस्थाई सफलता के पीछे माननीय मूल्यों प्रतिबद्धताओं को किनारे कर उस मरीचिका की तरफ दौड़ रहा है जो अत्यंत अस्थाई एवं पानी के बुलबुले की तरह है। और इससे न तो कोई इतिहास बनता है और ना ही कोई प्रतिमान ही स्थापित होता है। पानी का पतला रेला नदी का रूप नहीं ले सकता। उसी तरह बिना मूल्यों की सफलता स्थाई नहीं होती है। राजनीति तथा प्रशासन में मूल्यों सिद्धांतों की तो ज्यादा आवश्यकता महसूस की जाती है। क्योंकि राष्ट्र तथा नीति निर्देशक तत्वों को संचालन की दिशा देने के लिए मानवीय संवेदना, मूल्य और सिद्धांतों की अत्यंत आवश्यकता होती है। अन्यथा समाज दिग्भ्रमित होकर बिखरने के कगार पर पहुंच जाता है। राष्ट्र विखंडित होने की स्थिति में आ जाता है। मूल्य विहीन समाज अपने अधिकारों के दुरुपयोग तथा कर्तव्य के प्रति लापरवाही तथा उदासीनता के चलते समाज को सोचनीय स्तर पर लाकर खड़ा कर देता है। सफलता तब ही शाश्वत तथा स्थाई हो सकती है जब इसमें जीवन के मूल्यों और सिद्धांतों का समावेश होता है।

अमेरिका को इजराइल-हमास युद्ध के और तेज होने की आशंका, अमेरिकी सैन्यकर्मियों को निशाना बनाने पर ब्लिंकन ने दी चेतावनी

वाशिंगटन। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने कहा कि ईरानी की भागीदारी के कारण इजराइल-हमास युद्ध भड़कने की आशंका है। उन्होंने जोर देकर कहा कि यदि अमेरिकी सैन्यकर्मियों या सशस्त्र बलों को निशाना बना कर कोई कार्रवाई की जाती है तो बाइडन प्रशासन इसका जवाब देने को तैयार है। ब्लिंकन ने कहा कि अमेरिका तनाव नहीं बढ़ाना चाहता। न ही हम चाहते हैं कि हमारे सैन्यकर्मी गोलीबारी की चपेट में आएं। लेकिन आशंका है कि ईरान की ओर से शामिल लड़ाके हमारे सैन्यकर्मियों को निशाना बना कर तनाव को बढ़ाएंगे। हम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि हम अपने लोगों की प्रभावी ढंग से रक्षा कर सकें और जरूरत के समय निर्णायक जवाब दे सकें। उल्लेखनीय है कि गाजा क्षेत्र में इजराइल ने जवाबी कार्रवाई तेज कर दी है। इजराइली लड़ाकू विमानों ने रविवार को गाजा इलाके के विभिन्न ठिकानों पर हमले के साथ-साथ दो हवाई अड्डों को निशाना बनाया। इजराल ने लेबनान के आतंकी समूह हिज्बुल्ला के ठिकानों पर भी लगातार गोलीबारी की है। हिज्बुल्ला को चेतावनी देते हुए इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने अपने सैनिकों से कहा कि यदि हिज्बुल्ला ने युद्ध शुरू किया तो यह उसकी बड़ी भूल साबित होगी क्योंकि हम उसे इतना जोर का झटका देंगे, जिसकी उसने कल्पना न की होगी। यह उसके और लेबनान दोनों के लिए विनाशकारी होंगे।

कनाडा में तिरंगे को पैरों से रौंदा..दशहरे पर खालिस्तानियों ने पीएम मोदी के पुतले को जलाने का किया ऐलान

टोरंटो। कनाडा में खालिस्तान समर्थकों द्वारा हर रोज कोई ना कोई हंगामा करने की खबर सामने आ ही जाती है। इस बार कनाडा के वैंकूवर में खालिस्तान समर्थकों ने भारतीय दूतावास को एक बार फिर घेर कर आपना रोष प्रदर्शन किया।

आपको बता दें की खालिस्तान समर्थकों ने कनाडा के शहर वैंकूवर में कार रैली करने की घोषणा की थी। लेकिन इस रैली में कम गाड़ियां होने की वजह से प्रदर्शन फ्लॉप हो गया। जिसकी वजह से खालिस्तानी समर्थक बौखला गए और भारतीय दूतावास के सामने

अपना रोष प्रदर्शन करने लगे। इतना ही नही खुद भारत देश के होने के बावजूद उन्होंने तिरंगे को सड़क पर बिछा कर पैरों से रौंदा और उसका अपमान किया। साथ ही खालिस्तान समर्थकों ने मंगलवार को दशहरे के दिन को मनाने का ऐलान करते हुए कहा कि, इस बार दशहरे के दिन रावण का नहीं बल्की भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पुतले को जलाने वाले हैं। उस वक्त उन्होंने पीएम मोदी के कटआउट को बेड़ियां पहना कर सड़क पर जलूस भी निकाला। बता दे खालिस्तानी समर्थकों ने एक पोस्टर को रिलीज करते हुए भारी मात्रा में लोगों को दशहरे के दिन वाह्यं पहुंचने के लिए कहा है।

अमेरिकी में लैब का चीनी मालिक स्वास्थ्य नियम तोड़ने के आरोप में गिरफ्तार

न्यूयार्क: अमेरिका में अनधिकृत सेंट्रल कैलिफोर्निया लैब के चीनी मालिक को कोविड-19, गर्भावस्था और एचआईवी के परीक्षण के निर्माण के लिए उचित परमिट प्राप्त न करने और कुछ किटों पर गलत लेबल लगाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। कैलिफोर्निया के पूर्वी जिले के अमेरिकी अटॉर्नी कार्यालय के अनुसार, 62 वर्षीय जिया बेई झू को अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन की जांच के बाद गुरुवार को गिरफ्तार किया गया था। उन पर गलत बयान देने का भी आरोप है। कार्यालय ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा, झू, जिसे जेसी झू, कियांग हे और डेविड हे के नाम से भी जाना जाता है, चीन का नागरिक है जो पहले क्लोविस, कैलिफोर्निया में रहता था। अदालत के दस्तावेजों में आरोप लगाया गया है कि दिसंबर 2020 और मार्च 2023 के बीच, झू और अन्य ने अमेरिका और चीन में सैकड़ों हजारों कोविड-19 परीक्षण किट के साथ-साथ एचआईवी, गर्भावस्था और अन्य स्थितियों के परीक्षणों का निर्माण, आयात, बिक्री और वितरण किया।

'रैथ ऑफ गॉड' की तरह हमास के आतंकियों से चुन-चुनकर बदला लेगा इस्राइल, बनाई खास यूनिट

तेल अवीव। इस्राइल अपने दुश्मनों से चुन-चुनकर बदला लेने के लिए जाना जाता है। बीते दिनों हमास के हमले में 1400 इस्राइली नागरिकों की मौत हुई थी। अब खबर आ रही है कि इस्राइल की खुफिया एजेंसी मोसाद और शिन बेत ने हमास के हमले का बदला लेने के लिए एक खास कमांडो यूनिट बनाई है। इस कमांडो यूनिट का उद्देश्य इस्राइल पर हमला करने वाले हमास के आतंकियों से बदला लेना है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, इस नई यूनिट का नाम प्रथम विश्व युद्ध के समय खुफिया यहूदी संगठन %निली% के नाम पर रखा गया है।

नुखबा यूनिट से बदले के लिए इस्राइल ने बनाई नई फोर्स

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, यह नई यूनिट को इस्राइल पर हमला करने वाली हमास की नुखबा यूनिट के आतंकियों का सफाया करने की जिम्मेदारी दी गई है। बता दें कि बीती 7 अक्तूबर को हमास की नुखबा यूनिट के 2500 आतंकियों ने इस्राइल की सीमा में घुसकर अधिकतर निर्दोष लोगों को निशाना बनाया था। इस हमले में 1400 इस्राइली लोगों की मौत हुई और 210 लोगों को अगवा कर लिया गया था। उसके बाद से ही इस्राइल द्वारा गाजा पट्टी पर लगातार हमले किए जा रहे हैं, जिसमें 4600 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। इस्राइल के हमले में हमास के कुछ शीर्ष कमांडर भी ढेर हो चुके हैं, जिनमें हमास की खान यूनिस बटालियन का प्रमुख बिलाल अल केदरा और हमास का कंपनी कमांडर अली कादी शामिल हैं। इस्राइल के हमले में हमास की नखुबा यूनिट के भी आतंकी ढेर हो चुके हैं।

क्या है 'रैथ ऑफ गॉड'

बता दें कि साल 1972 के ओलंपिक खेलों में फलस्तीन के आतंकियों खेलगांव में ठहरे इस्राइली खिलाड़ियों को बंधक बनाकर हत्या कर दी थी। इस घटना के बाद इस्राइली खुफिया एजेंसी मोसाद ने ऑपरेशन 'रैथ ऑफ गॉड' शुरू किया। इस ऑपरेशन के तहत मोसाद के लोगों ने दुनिया भर में चुन-चुनकर अगले 20 सालों में इस्राइली खिलाड़ियों की हत्या करने वाले आतंकियों को मौत के घाट उतारा। अब हमास के इस्राइल में हमले के बाद इस्राइल के निशाने पर हमास के दो शीर्ष नेता हैं, जिनमें हमास का सैन्य कमांडर मोहम्मद दईफ और हमास का शीर्ष राजनीतिक नेता याहया शिनवर शामिल है। इस्राइल ने दोनों को मारने की धमकी दी और दोनों को ढूंढने के लिए कार्रवाई तेज कर दी है। माना जा रहा है कि हमास के दोनों शीर्ष नेता गाजा पट्टी में बनीं सुरंगों के नेटवर्क में मौजूद हैं।

ये दो नेता हैं इस्राइल के निशाने पर

याहया शिनवर (61 वर्षीय) साल 2017 में हमास का शीर्ष नेता चुना गया था। साल 1987 में जिन लोगों ने मिलकर हमास का गठन किया था, उनमें याहया शिनवर भी शामिल था। याहया शिनवर ने इस्राइल की जेल में 23 साल गुजारे हैं और वह हिब्रू भाषा का जानकार है। साल 2011 में चार इस्राइली सैनिकों की हत्या के मामले में उसे जेल हुई थी। हालांकि इस्राइली सैनिक गिलाद शालित के बदले इस्राइल ने याहया शिनवर समेत 1100 फलस्तीनी कैदियों को रिहा कर दिया था। याहया शिनवर और मोहम्मद दईफ दोनों का जन्म गाजा के खान यूनिस शरणार्थी कैंप में हुआ है। याहया शिनवर की तरह मोहम्मद दईफ के बारे में ज्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं है। दईफ हमास की सैन्य ईकाई का प्रमुख है और अपनी पहचान छिपाकर रहता है। उसकी 20 साल पुरानी फोटो ही उपलब्ध है। इस्राइली हमले में दईफ की पत्नी और बच्चे की मौत हो चुकी है और उस पर कई बार जानलेवा हमला हो चुका है लेकिन हर बार वह जिंदा बच निकलने में कामयाब रहा है। साल 2002 में मोहम्मद दईफ हमास की सैन्य ईकाई का प्रमुख बना और तब से अब तक इस्राइल के लिए सबसे बड़ा सिरदर्द बना हुआ है।

कार दुर्घटना के बाद भारतवंशी बुजुर्ग सिख की बुरी तरह की पिटाई, सिर में चोट लगने से हुई मौत

न्यूयॉर्क। न्यूयॉर्क में कार दुर्घटना के बाद 66 वर्षीय भारतीय मूल के सिख बुजुर्ग की एक व्यक्ति ने पीट पीट कर हत्या कर दी। शहर के मेयर एरिक एडम्स ने एक्स सिख की मौत पर शोक व्यक्त किया है। बता दें, न्यूयॉर्क में सिखों पर लगातार हमले हो रहे हैं। सिखों के खिलाफ करीब एक सप्ताह में यह दूसरी दुखद घटना है।

19 अक्तूबर की घटना

एक कार दुर्घटना के बाद 30 वर्षीय गिल्बर्ट ऑगस्टिन ने जसमेर सिंह पर हमला कर दिया था, जिससे उनके सिर में चोट लग गई थी। गंभीर हालत में उन्हें क्रींस के अस्पताल ले जाया गया, जहां एक दिन बाद उनकी मौत हो गई। जसमेर सिंह के साथ मारपीट की घटना 19 अक्तूबर को हुई थी। गिल्बर्ट ऑगस्टिन को 20 अक्तूबर को गिरफ्तार कर लिया गया था।

न्यूयॉर्क सिटी के मेयर एरिक

एडम्स ने घटना की निंदा की है और समुदाय की रक्षा करने का संकल्प लिया है। उन्होंने कहा, 'जसमेर सिंह न्यूयॉर्क शहर से प्यार करते थे और अपनी दुखद मौत से कहीं अधिक के हकदार थे। सभी न्यूयॉर्क वासियों की ओर से, मैं चाहता हूं कि हमारा सिख समुदाय यह जाने कि आपके प्रति हमारी संवेदनाएं अधिक हैं। हम उस नफरत को अस्वीकार करते हैं जिसने इस निर्दोष की जान ले ली और हम आपकी रक्षा करेंगे।'

यह है पूरा मामला

भारतीय मूल के सिख और ऑगस्टिन की कार आपस में टकरा गई थी। हादसे की वजह से कारों में खरोंच आ गई। इस पर ऑगस्टिन आग बबूला हो गया। इस पर सिंह ने 911 पर फोन करने की कोशिश की तो उसने फोन छीन लिया। ऑगस्टिन से अपना फोन लेने के लिए सिंह उसके पीछे जाने लगे। इस पर दोनों के बीच बहस होने लगी।

सिंह ऑगस्टिन से अपना फोन लेने के बाद अपनी कार में वापस चले गए। इस पर आरोपी ने सिख के सिर और चेहरे पर तीन बार मुक्का मारा।

सिंह जमीन पर गिर गए और उनके सिर पर चोट लग गई। बाद में, ऑगस्टिन घटनास्थल से फरार हो गया। सिंह को गंभीर हालत में एक स्थानीय अस्पताल ले जाया गया, जहां सिर की चोट के कारण उनकी मौत हो गई। पुलिस ने शुक्रवार को ऑगस्टिन को दुर्घटनास्थल से लगभग दो मील की दूरी पर गिरफ्तार कर लिया।

गोपनीय दस्तावेज लीक मामले में पूर्व पीएम इमरान खान पर आरोप तय, जेल में ही हुई मामले की सुनवाई

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की एक विशेष अदालत ने देश के गोपनीयता कानूनों का उल्लंघन करने से जुड़े साइफर मामले में पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान पर आरोप तय किए गए हैं। इमरान के साथ पूर्व विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी पर भी इस मामले में आरोप तय किए गए हैं। गौरतलब है कि इमरान ने पिछले साल मार्च में कथित तौर पर अमेरिका को पाकिस्तान के दूतावास द्वारा भेजे गए एक गुप्त राजनयिक केबल (साइफर) को लीक किया था। इसी मामले में उन पर आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम का उल्लंघन करने का आरोप लगा था और इस साल अगस्त में उन्हें गिरफ्तार किया गया। इमरान ने उक्त दस्तावेज का इस्तेमाल यह बताने के लिए किया था कि उनकी सरकार को विदेशी साजिश के तहत गिराया गया था।मामले की सुनवाई रावलपिंडी की अदियाला जेल में विशेष अदालत के न्यायाधीश अबुल हसनत जुल्करनैन ने की। हालांकि, इमरान और कुरैशी ने अपने ऊपर लगाए गए आरोपों को खारिज करते हुए खुद को निर्दोष बताया है।

मस्क ने मेटा के बाद विकिपीडिया से लिया पंगा, कहा- अगर नाम बदला तो दूंगा एक अरब डॉलर

न्यूयॉर्क। अरबपति एलन मस्क अपने बयानों की वजह से हमेशा ही चर्चा में रहते हैं। हाल ही में उन्होंने मेटा को चुनौती दी थी, जिसके बाद माहौल गर्मा गया था। वहीं, अब उन्होंने विकिपीडिया से भी पंगा ले लिया है। उन्होंने कहा कि अगर विकिपीडिया अपना नाम बदलेगा तो वह उसे एक अरब डॉलर देंगे।

विकिपीडिया को चैलंज

गौरतलब है, अरबपति बिजनेसमैन एलन मस्क ने पिछले साल ट्विटर को पूरी तरह से खरीद लिया था। इसके बाद से ही वह नए-नए बदलाव करते रहे हैं। कुछ महीनों पहले ही ट्वीटर का

नाम बदलकर एक्स रख दिया था। अब इस बीच उन्होंने विकिपीडिया को भी चैलंज दिया है।

अरबपति ने कहा, 'अगर विकिपीडिया अपना नाम बदलता है तो मैं उसे एक अरब डॉलर दूंगा।' इस पर यूजर ने विकिपीडिया को नाम बदलने की सलाह दी और कहा जैसे ही रुपये मिल जाए वापस आप अपना नाम बदल लेना। इस पर मस्क ने एक शर्त रख दी। उन्होंने कहा कि मैं पागल नहीं हूं। विकिपीडिया को कम से कम एक साल के लिए नाम बदलना होगा। टेस्ला के सीईओ ने एक और पोस्ट किया।

उसमें उन्होंने विकिपीडिया के होमपेज का एक स्क्रीनशॉट साझा किया, जिसमें उल्लेख किया गया था कि जिमी वेल्स की तरफ से अपील है कि विकिपीडिया बिक्री के लिए नहीं है।

इस्राइली सरकार जारी करेगी हमास के बर्बर हमले के अनदेखे वीडियो

यरूशलम। इस्राइली सरकार ने कहा है कि वह हमास के बर्बर हमले के वीडियो जारी करेगी। इस्राइल सरकार के इस कदम का उद्देश्य दुनिया को ये बताना है कि हमास के आतंकियों ने कितने बर्बर तरीके से महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों को निशाना बनाया। इस्राइली हमले में गाजा पट्टी में भारी तबाही के बाद फलस्तीनी लोगों के लिए दुनिया भर में सहानुभूति की लहर उठ रही है। ऐसे में इस्राइल ने अपने लिए समर्थन जुटाने के लिए ये वीडियो जारी करने का फैसला किया है। इस्राइली सरकार के प्रवक्ता इलोन लेवी ने एक सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए बताया कि हमास के आतंकियों के शरीर पर लगे कैमरों में इस्राइली नागरिकों के खिलाफ हुई बर्बरता कैद है। इस्राइल में मारे गए कई हमास आतंकियों के बॉडी कैमरे में कैद वीडियो को अब इस्राइली सरकार ने जारी करने का फैसला किया है। लेवी ने लिखा कि यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमें ये वीडियो जारी करने पड़ रहे हैं। ये वीडियो सरकार के प्रेस कार्यालय में विदेशी मीडिया के सामने सोमवार को जारी किए जाएंगे। बता दें कि कई देशों में इस्राइल के गाजा पट्टी पर हमले के विरोध में धरने प्रदर्शन शुरू हो गए हैं। इस पर इस्राइल सरकार ने कहा है कि होलोकास्ट की तरह उनके देश पर हुए इस बर्बर हमले को भी नकारा जा रहा है।

रिहायशी इमारत पर हमले में 30 फलस्तीनियों की मौत, 24 घंटे में गई 266 की जान

लाहौर। इस्राइल के हमले में 30 फलस्तीनी नागरिकों की मौत की खबर है। फलस्तीनी मीडिया ने सोमवार को यह दावा किया है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, इस्राइल ने गाजा में एक रिहायशी इमारत को निशाना बनाया। जिस इमारत को निशाना बनाया गया, वह गाजा के जबालिया शरणार्थी कैंप के अल-शुहादा इलाके में स्थित थी। फलस्तीनी मीडिया के अनुसार, हमले के बाद इमारत पूरी तरह से तबाह हो गई और इमारत में मौजूद कम से कम 30 लोगों की मौत हो गई।

बीते 24 घंटे में 266 लोगों की मौत का दावा

वहीं गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय ने दावा किया है कि बीते 24 घंटे में इस्राइल के हवाई हमले में 266 फलस्तीनी नागरिकों की मौत हुई है, इनमें 117 बच्चे भी शामिल हैं। बताया जा रहा है कि बीते दो हफ्ते में इस्राइल के हमले में गाजा पट्टी में 4600 लोगों की मौत हुई है। वहीं हमास के हमले में इस्राइल में 1400 लोगों की मौत हुई है। वहीं इस्राइली सेना ने कहा है कि उसने लेबनान में आतंकी संगठन हिज्बुल्ला के दो ठिकानों को निशाना बनाया है, जहां से इस्राइल पर रॉकेट हमले की तैयारी की जा रही थी। हिजबुल्ला ने भी माना है कि उसका एक लड़ाका मारा गया है।

बेंजामिन नेतन्याहू ने हिजबुल्ला को दी चेतावनी

इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने हिजबुल्ला को चेतावनी दी है कि अगर हिजबुल्ला ने लड़ाई में शामिल होने की कोशिश की तो दूसरा लेबनान युद्ध हो सकता है और यह गलती हिजबुल्ला की सबसे बड़ी गलती होगी। सीरियाई मीडिया ने दावा किया है कि इस्राइल की मिसाइलों ने दमिश्क और अलेप्पो इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर भी हमला किया है। जिसके चलते एयरपोर्ट का संचालन बाधित हो गया है और दो लोगों की मौत हुई है। इस्राइली सेना ने भी बयान जारी कर कहा है कि दक्षिण में रविवार को उसके टैंक से गलती से मिस्त्र के ठिकाने पर हमला हुआ है। मिस्त्र ने कहा है कि इस हमले में उसके कुछ सैनिक घायल हुए हैं।

'अगर हमास के साथ हो रहे युद्ध के बीच में आया तो पीएम नेतन्याहू ने हिजबुल्लाह को दी चेतावनी

यरूशलम। इस्राइल-हमास संघर्ष को 17 दिन हो गए है। छह हजार से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। इस बीच, इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने ईरान समर्थित लेबनान के चरमपंथी संगठन हिजबुल्लाह को एक बार फिर हमास का साथ देने को लेकर चेतावनी दी है। उन्होंने कहा कि अगर हमास से हो रहे युद्ध में बीच में आएगा तो हिजबुल्ला की अबतक की सबसे बड़ी गलती होगी।

कमांडो ब्रिगेड का दौरा

दरअसल, इस्राइली पीएम नेतन्याहू लेबनान सशस्त्र समूह हिजबुल्ला के साथ चल रही सैन्य कार्रवाई के बीच रविवार को उत्तरी इजरायल में इजरायली रक्षा बल (आईडीएफ) कमांडो ब्रिगेड का दौरा करने पहुंचे थे। इसी दौरान, उन्होंने सैनिकों के साथ बात की और कहा यदि हिजबुल्लाह युद्ध के बीच में आता है, तो यह दूसरे लेबनान युद्ध का कारण बनेगा और वह अपने जीवन की सबसे बड़ी गलती करेगा। उन्होंने कहा, 'वर्तमान में, मैं भविष्यवाणी नहीं कर सकता कि हिजबुल्लाह युद्ध में पूरी तरह से संलग्न होगा या नहीं। अगर हिजबुल्लाह ऐसा करने का फैसला करता है, तो उसे पछतावा होगा। हम हिजबुल्ला पर एक ऐसी ताकत से हमला करेंगे, जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकता और यह हिजबुल्ला और लेबनानी राज्य दोनों के लिए विनाशकारी होगा।' नेतन्याहू ने यह भी आश्वासन दिया कि इस्राइल किसी भी परिदृश्य के लिए तैयार है। बता दें, इस्राइल और हमास के बीच युद्ध लगातार जारी है। हर तरफ चीख-पुकार मची हुई है। सात अक्तूबर से लेकर अब तक छह हजार से अधिक लोगों की इस संघर्ष में मौत हो चुकी है। वहीं, हमास के बाद इस्राइली सेना भी कार्रवाई करते हुए बिना रुके हमले कर रही है। अभी तक गाजा पट्टी में 4600 और इस्राइल में 1400 लोगों की जान जा चुकी है।

राष्ट्रपति पद की रेस में आगे निकले अर्थव्यवस्था मंत्री सर्गियो मासा, ट्रंप समर्थक माइली को झटका

फ्रैंकफर्ट। अर्जेंटीना में राष्ट्रपति चुनाव के शुरुआती नतीजों में देश के अर्थव्यवस्था मंत्री सर्गियो मासा आगे निकल गए हैं। खबर लिखे जाने तक 86 प्रतिशत वोटों की गिनती हो चुकी थी, जिनमें से मासा को 36.2 प्रतिशत वोट मिले और वह सबसे आगे हैं। वहीं दक्षिणपंथी और लोकप्रिय नेता आश्चर्यजनक रूप से पिछड़ गए हैं और 30.3 प्रतिशत वोटों के साथ दूसरे स्थान पर हैं। अब नवंबर में अंतिम चरण का मतदान होना है और ताजा नतीजों से साफ है कि दोनों नेताओं के बीच नवंबर में कड़ी टक्कर देखने को मिलेगी।

चुनावी सर्वेक्षण साबित हुए गलत

अर्जेंटीना में अधिकतर चुनाव सर्वेक्षण दक्षिणपंथी नेता जेवियल माइली को बढ़त दिखा रहे थे, वहीं मासा दूसरे स्थान पर थे। हालांकि नतीजों ने चौंकाया है। सर्गियो मासा साल 2019 से सत्ता पर काबिज सरकार में अर्थव्यवस्था मंत्री हैं और खराब अर्थव्यवस्था के बावजूद उनकी लोकप्रियता बरकरार है। मासा ने मतदाताओं से खराब अर्थव्यवस्था पर कहा कि उन्हें विरासत में बिगड़ी हुई अर्थव्यवस्था मिली और अब सूखे के हालात ने स्थिति को और बिगाड़ दिया है। हालांकि वह मतदाताओं को यह विश्वास दिलाने में कामयाब रहे हैं कि बुरा समय बीत गया है और जल्द ही अर्जेंटीना की अर्थव्यवस्था के हालात बेहतर हो जाएंगे।

ट्रंप समर्थक माइली को झटका

वहीं दक्षिणपंथी नेता जेवियर माइली एक पूंजीवादी नेता और अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के समर्थक माने जाते हैं। बीते अगस्त में हुए प्राथमिक चुनाव में माइली ने सभी को चौंकाते हुए सबसे ज्यादा वोट हासिल किए थे। माइली ने चुनाव प्रचार के दौरान लोगों से वादा किया कि उनकी सरकार बनने पर सरकारी खर्च को कम किया जाएगा, सरकारी मंत्रालयों की संख्या को घटाकर आधा किया जाएगा और केंद्रीय बैंक को खत्म कर स्थानीय मुद्रा को अमेरिकी डॉलर से बदला जाएगा।माइली अपने चुनाव अभियान के दौरान पारंपरिक राजनीतिक पार्टियों और राजनेताओं के खिलाफ जमकर बोले। यही वजह है कि 140 फीसदी की महंगाई दर और तेजी से गिरती मुद्रा से परेशान लोगों का माइली को खूब समर्थन मिला। अर्जेंटीना में गरीबी बढ़ रही है और महंगाई भी बहुत ज्यादा है। पूर्व सुरक्षा मंत्री पैट्रिशिया बलरिच तीसरे स्थान पर आई हैं।

दंत चिकित्सक , व्यतित्व के धनी स्वर्गीय डाक्टर डी.डी मिश्रा के दूसरे पुण्यतिथि पर

मरीजों को निशुल्क इलाज , पत्नी पूनम मिश्रा ने 6 सौ लोगो को कराया भोजन

पुष्पांजली टुडे

विवेक तिवारी (संभागीय ब्यूरो)

सिंगरौली । जिले के प्रतिष्ठित , कई सामाजिक छेत्र से जुड़े , समाज में अपनी एक अलग छवि बनाने वाले तथा दंत चिकित्सक , हीरावती हॉस्पिटल नर्सिंग होम संचालक , दैनिक हीरावती न्यूज टाइम्स समाचार पत्र के संपादक , जिला फुटबाल संघ जिला सचिव स्वर्गीय डाक्टर डी.डी मिश्रा का जबलपुर में 2 वर्ष पूर्व सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी उनके दूसरी पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पूनम मिश्रा ने काली मंदिर स्थित डेंटल चैंबर बैढ़न में मरीजों को दिन शनिवार को निशुल्क इलाज , परामर्श दिया गया तथा दिन सोमवार को उनकी पत्नी श्रीमती पूनम मिश्रा , बेटा दीपांशु मिश्रा ने स्वयं अपने हाथो से दीन दयाल रसोई बैढ़न में 6 सौ लोगो को भोजन करवाई वही फुटबाल संघ जिला सिंगरौली के पदाधिकारियों , खिलाड़ियों ने एनटीपीसी विंध्यनगर में खिलाड़ियों के बीच स्वर्गीय डाक्टर डी.डी मिश्रा के प्रतिमा में पुष्प अर्पित कर दो मिनट का मौन रखकर सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित किए और उनके छवि , सामाजिक कार्यों में उनकी भूमिका , लोकप्रियता पर अपनी ङ्क अपनी बाते रखे । आगे बता दे कि स्वर्गीय डाक्टर डी.डी मिश्रा समाज के लिए प्रेरणा स्त्रोत रहे समाज के बीच में उनकी एक अलग भी छवि थी उनके शुभचिंतक , करीबी लोग बताते है कि वो अपने लोगो , समाज के लिए उनके सुख ङ्क दुख में इतना व्यस्तम समय होने के बावजूद भी पहुंचने का प्रयास करते थे अब उनके जैसा व्यतित्व के धनी व्यक्ति इस संसार में नही मिल सकता ।

सरदार पटेल जी का जीवन हम सबके लिए प्रेरणास्त्रोत – बी एन त्रिपाठी

पुष्पांजली टुडे

रीवा।आधुनिक इतिहास की अहम घटनाओं में से एक रहा 562 देशी रियासतों का एकीकरण और इसके साथ रखी गई बुलंद भारत की नींव और इस काम को अंजाम देने वाले सरदार वल्लभ भाई पटेल की आज 145वीं जयंती है।इस कारण 31 अक्तूबर के दिन प्रतिवर्ष उनकी जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के तौर पर मनाते हैं।आज राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर शहर में स्थित पेंटियम प्वाइंट ग्रुप ऑफ़ इंस्टिट्यूशन के करहिया परिसर मे सरदार पटेल की जन्म जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आज के इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाविद्यालय के मुख्य प्रबंध संचालक बी एन त्रिपाठी रहे। इस कार्यक्रम मे मुख्य वक्ता के रूप में शासकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय में पदस्थ प्राध्यापक एवं चिकित्सक डॉ आशुतोष द्विवेदी रहे, विशिष्ट अतिथि के रूप में पेंटियम प्वाइंट ग्रुप ऑफ़ इंस्टिट्यूशन के शैक्षणिक संचालक एसके त्रिपाठी रहे। पेंटियम प्वाइंट टेक्निकल कॉलेज की प्राचार्या डॉ सीमा शुक्ला उपस्थिति रही।कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ आशुतोष द्विवेदी ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि सरदार पटेल भारत की एकता और अखंडता को स्थापित करने वाली महान विभूतियां में से एक है, उन्होंने

अपने उद्बोधन में संपूर्ण भारत का समग्र चित्रण प्रस्तुत किया। वर्तमान भविष्य तथा इतिहास को लेकर एकता तथा अखंडता से छात्राओं का परिचय कराया, राष्ट्रीय एकता दिवस में छात्राओं को संबोधित करते हुए भगवान राम से सीख लेने की बात भी उन्होंने कही उन्होंने कहा कि सबसे पहले परिवार इसके बाद समाज और देश में एकता की आवश्यकता है। कार्यक्रम में छात्राओं को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने छात्रों को सरदार पटेल के जीवन से सीख लेने के लिए प्रेरित किया साथ ही उन्होंने राष्ट्रीय महत्व की बातों का ध्यान रखने की भी बात कही तथा हर विषय में राष्ट्र प्रथम ऐसी विचारधारा छात्र-छात्राओं के अंदर उन्होंने प्रेरित की। आज के इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से महाविद्यालय की वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ सविता शुक्ला, डॉ अर्चना पटेल, महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ राकेश तिवारी, अखिलेश मिश्रा,गिरीश भाई पटेल,ज्ञानेंद्र तिवारी, प्रदीप सोनी,केसी त्रिपाठी, ऋषि केश मिश्रा, कुलदीप पाण्डेय आदि प्राध्यापक, सहायक प्राध्यापक तथा छात्र-छात्रा संख्या में उपस्थित रहे।

पुलिस अधीक्षक ने नगेन्द्र यादव को सौंपी मऊगंज थाना की कमान

दैनिक पुष्पांजलि टुडे
पुष्पेंद्र सिंह ब्यूरो चीफ
मऊगंज

मऊगंज। थाना प्रभारी गिरीश धुर्वे को निलंबित करते हुए एसपी वीरेंद्र जैन ने श्री धुर्वे के स्थान पर नगेन्द्र यादव की साफ सुथरी छवि को देखते हुए एक बार फिर से उन्हें मऊगंज का थाना प्रभारी नियुक्त किया है। आपको बता दें कि निलंबित थाना प्रभारी गिरीश धुर्वे पर महिला ने शादी का झांसा देकर यौन शौषण करने एवं अपनी सर्विस रिवॉल्वर अड़ाकर स्टांप पेपर पर साइन कराने जैसे गंभीर आरोप लगाने पर उनके खिलाफ सिहोरा थाना में प्रकरण दर्ज किया गया है।

कलेक्टर ने 14 आदतन अपराधियों को किया जिला बदर

कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए 14 अपराधियों को हुए जिला बदर के आदेश

पुष्पांजली टुडे

रीवा। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्रीमती प्रतिभा पाल ने 14 आदतन अपराधियों को जिला बदर के आदेश दिए हैं। विधानसभा चुनाव के समय कानून और व्यवस्था बनाए रखने तथा आमजनता की सुरक्षा को ध्यान में रखकर यह कार्यवाही की गई है। कलेक्टर ने मध्यप्रदेश राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 की धारा 5 ख के तहत एक वर्ष के लिए जिला बदर के आदेश दिए हैं। इन 15 आदतन अपराधियों द्वारा लगातार आपराधिक गतिविधियों में लिप्त रहने, मारपीट, गुण्डागर्दी, गाली गलौज, अवैध शस्त्रों के उपयोग, लोगों को डराने-धमकाने तथा अन्य आपराधिक कृत्यों के कारण यह कार्यवाही की गई है। बार-बार समझाइश के बावजूद इन अपराधियों के आचरण में किसी तरह का सुधार नहीं हो रहा है। इनके कृत्यों से जनमानस में आतंक एवं भय व्याप्त है। इनका स्वच्छंद रहना आमजनता के लिए हितकर नहीं है जिसके कारण कलेक्टर द्वारा पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह के प्रतिवेदन के आधार पर जिला बदर की कार्यवाही की गई है। इन सभी आदतन अपराधियों को एक वर्ष की अवधि के लिए रीवा जिले की राजस्व सीमाओं से बाहर रहने के आदेश दिए गए हैं। सक्षम अधिकारी के आदेश के बाद ही ये रीवा जिले की सीमाओं में प्रवेश कर सकेंगे। आदेश का उल्लंघन करने पर मध्यप्रदेश राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 की धारा 14 के तहत प्रकरण दर्ज कर कार्यवाही की जाएगी। लेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी ने रजनीश विश्कर्मा उर्फ जग्गा निवासी लक्ष्मणबाग थाना बिछिया, संदीप पटेल निवासी लक्ष्मणपुर थाना बिछिया, अभिषेक उर्फ प्रीतम कोल निवासी ललपा थाना बिछिया, बेटू उर्फ राजकरण सिंह निवासी तेंदुन थाना बैकुण्ठपुर, सूरज साकेत उर्फ नक्का निवासी नौवस्ता थाना चोरहटा, शैलेष साकेत निवासी महिया थाना रायपुर कर्चुलियान, तौहीद निवासी रायपुर कर्चुलिया एवं पुष्पेन्द्र पटेल निवासी गोरगांव थाना रायपुर कर्चुलियान को एक वर्ष की अवधि के लिए जिले की सीमा से बाहर जाने का आदेश दिया है। सी प्रकार सुरेश साकेत निवासी महाजन टोला थाना बिछिया, चुन्नू प्रजापति उर्फ दुर्गेश निवासी कोरियान मोहल्ला थाना सिटी कोतवाली, अमन मिश्रा निवासी समान बांध गुलाब नगर थाना समान, दिवाकर सिंह निवासी सूती थाना जनेह, दीपेन्द्र कुमार पाण्डेय उर्फ अन्नू निवासी व्यौहरा थाना रायपुर कर्चुलियान एवं शुभम पाण्डेय निवासी पटना थाना रायपुर कर्चुलियान को एक वर्ष की अवधि जिला दण्डाधिकारी द्वारा जिला बदर किया गया है।

भ्रष्टाचार को न कहें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहे जागरूकता रैली निकाली गई

पुष्पांजली टुडे

रीवा। केंद्रीय सतर्कता आयोग के निर्देश पर यूनियन बैंक ऑफ इंडिया प्रति वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाता है। इस दौरान प्रमुख गतिविधियों में से एक सतर्कता रैली का आयोजन क्षेत्र प्रमुख अजय खरे के कुशल नेतृत्व में अधिकारियों और सहकर्मियों की टीम के साथ किया गया। यह रैली क्षेत्रीय

कार्यालय यूबीआई से आरंभ होकर कॉलेज चौराहा तक निकाली गई। इस अवसर पर लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल को श्रद्धांजलि देते हुए क्षेत्र प्रमुख ने कहा कि विकसित राष्ट्र की आगे की यात्रा के लिए भ्रष्टाचार को खत्म करना होगा। साथ ही टीम के सदस्यों को भ्रष्टाचार से ल?ने के लिए उपलब्ध उपायों के बारे में जागरूक किया। उन्होंने यह भी कहा कि हमें एक संस्था के रूप में ईमानदारी, पारदर्शिता और स्वामित्व की संस्कृति विकसित करनी होगी। उन्होंने आयोग के उद्देश्य को दोहराया। भ्रष्टाचार को ना कहें- राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध रहें÷ रैली का आयोजन सतर्कता अधिकारी पुष्पेन्द्र कुमार द्वारा किया गया। रैली में उप क्षेत्र प्रमुख श्री सौरभ, श्री मदन, अग्रणी जिला प्रबंधक संजय निगम सहित बैंक के अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित रहे। रैली का समापन क्षेत्रीय कार्यालय हुआ।

केन्द्रीय जेल में राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया

पुष्पांजली टुडे

रीवा। केन्द्रीय जेल में राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर श्री अहमद रजा जिला एवं सत्र न्यायाधीश की उपस्थिति में लौह पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने जेल में परिरूद्ध बंदियों व जेल स्टाफ को राष्ट्र की एकता, अखण्डता और सुरक्षा को बनाये रखने एवं देश की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सत्यनिष्ठा पूर्वक अपना योगदान करने का संकल्प दिलाया। राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर बंदियों में रंगोली, निबंध, पेंटिंग, वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं नाटक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जेल अधीक्षक सतीश कुमार उपाध्याय, संजीव कुमार गेंदले, योगेन्द्र पमार उप जेल अधीक्षक, अभय मिश्रा जिला विधिक सहायता अधिकारी, डॉ. आरके मिश्रा, श्याम सिंह कुशवाह, राजेश शुक्ला, राजीव कुमार तिवारी, स्वदीप सिंह, विवेक मौर्य, तथा जेल में पदस्थ स्टाफ की सहभागिता रही।

उम्मीदवारों को आपराधिक मामलों की मीडिया में करनी होगी घोषणा – कलेक्टर

पुष्पांजली टुडे

रीवा। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती प्रतिभा पाल ने बताया है कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार विधानसभा निर्वाचन के सभी उम्मीदवारों को उनके विरूद्ध लंबित तथा दोषसिद्ध आपराधिक मामलों की मीडिया में घोषणा करनी होगी। यह घोषणा निर्धारित प्रपत्र फार्मेट सी-1 एवं सी-2 में नाम वापसी की अंतिम तिथि से लेकर मतदान होने की तारीख से दो दिन पहले तक कम से कम तीन अलग-अलग तारीखों में प्रकाशित करना होगा। यह सामग्री कम से कम 12 आकार फोंट में समाचार-पत्रों में उचित स्थान पर प्रकाशित की जानी चाहिए ताकि व्यापक रूप से प्रचारित किया जा सके।कलेक्टर ने कहा है कि आपराधिक मामलों वाले ऐसे सभी उम्मीदवारों के लिए यह भी अपेक्षित होगा कि वे उपर्युक्त अवधि के दौरान तीन अलग-अलग तारीखों को टीवी चैनलों पर भी उपर्युक्त घोषणा प्रकाशित करेंगे। किन्तु टीवी चैनलों पर घोषणा के मामलों में इसे मतदान सम्पन्न होने के लिए निर्धारित समय समाप्त होने से 48 घंटे पहले पूरा कर लिया जाना चाहिए। प्रारूप-26 की मद 5 और 6 में घोषणाओं के अनुसार आपराधिक मामलों वाले सभी उम्मीदवारों के मामले में, रिटर्निंग अधिकारी, समाचार पत्रों और टीवी चैनलों में व्यापक प्रचार के लिए आपराधिक मामलों के बारे में घोषणा प्रकाशित करने के लिए इन दिशानिर्देशों के बारे में एक लिखित पत्र देंगे। उम्मीदवारों को दिए जाने वाले ऐसे पत्र के लिए एक मानक फार्मेट सी-3 उपयोग करें। उम्मीदवार जिला निर्वाचन अधिकारी को अपने निर्वाचन व्यय लेखा के साथ उन समाचार पत्रों की प्रतियां जमा करेंगे जिनमें इस संबंध में उनकी घोषणा प्रकाशित की गई है। लेक्टर ने कहा कि राजनैतिक दलों द्वारा बनाए गए आपराधिक मामलों वाले उम्मीदवारों के मामले में उम्मीदवारों को रिटर्निंग अधिकारी के समक्ष यह घोषित करना होगा कि उन्होंने अपने राजनैतिक दल को अपने खिलाफ आपराधिक मामलों के बारे में सूचित कर दिया है। ऐसी घोषणा के लिए प्रावधान प्रारूप-26 में नई जो[]ी गई मद (6 क) में किया गया है। ऐसे सभी राजनैतिक दल संबंधित राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी को एक रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे जिसमें यह बताया गया हो कि उन्होंने इन दिशा-निर्देशों की अपेक्षाएं पूरी कर ली हैं और इसके साथ ही दल द्वारा प्रकाशित की गई घोषणा-पत्रों वाली पेपर कटिंग संलग्न है।

प्रेक्षकों की उपस्थिति में निर्वाचन कार्यों की समीक्षा बैठक संपन्न

पूरी निष्पक्षता और पारदर्शिता से विधानसभा चुनाव संपन्न होंगे – प्रतिभा पाल

पुष्पांजली टुडे

रीवा। कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में विधानसभा चुनाव के तैयारियों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। निर्वाचन आयोग द्वारा नियुक्त सामान्य प्रेक्षकों, पुलिस प्रेक्षक तथा व्यय प्रेक्षकों की उपस्थिति में आयोजित बैठक में निर्वाचन कार्यों की बिन्दुवार समीक्षा की गई। बैठक में प्रेक्षक श्री अभय सिंह ने कहा कि चुनाव में छोटी से छोटी बात का ध्यान रखें। निर्वाचन आयोग के निर्देशों का पूरी तरह से पालन करते हुए मतदान तथा मतगणना का कार्य संपन्न कराएं। यहाँ अधिकारियों की अच्छी टीम है। सभी ने पूरी तैयारी कर रखी है। मतदान दलों को प्रशिक्षण देते समय ईव्हीएम मशीन के संचालन का विशेष रूप से प्रशिक्षण दें। कभी-कभी बहुत छोटी सी त्रुटि के कारण मतदान में बाधा आ जाती है। ईव्हीएम मशीनों को बदलने के लिए भी उचित प्रबंध रखें। फ्लाइंग स्क्वाड लगातार जाँच का कार्य जारी रखें। संदिग्ध राशि और वस्तुओं की तत्काल जब्ती करें। असामाजिक तत्वों के विरूद्ध कठोर दण्डात्मक कार्यवाही करें। बैठक में प्रेक्षक श्री सुभाष कृष्ण दिवासे, प्रेक्षक श्री केएन रमेश, प्रेक्षक श्री विनीत कुमार, प्रेक्षक डॉ अश्वनी कुमार शर्मा तथा पुलिस प्रेक्षक श्री डी किशोर बाबू ने भी उपयोगी सुझाव दिए। बैठक में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती प्रतिभा पाल ने कहा कि जिले की सभी आठ विधान सभा क्षेत्रों में पूरी निष्पक्षता और पारदर्शिता से विधानसभा चुनाव कराया जाएगा। निर्वाचन आयोग के निर्देशों के अनुरूप समस्त तैयारियाँ कर ली गई हैं। आदतन अपराधियों के विरूद्ध जिला बदर तथा प्रतिबंधात्मक कार्यवाही लगातार की जा रही है। मतदान दलों के प्रथम चरण का प्रशिक्षण पूरा हो चुका है। दूसरे चरण का प्रशिक्षण 7 से 10 नवम्बर तक दिया

जाएगा। दिव्यांग मतदाताओं तथा 80 साल से अधिक आयु के मतदाताओं को डाक मतपत्र से मतदान की सुविधा देने के लिए पूरी व्यवस्था कर ली गई है। विधानसभा चुनाव के दौरान कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए रीवा जिले से जु? अन्य जिलों तथा अन्य प्रदेशों के अधिकारियों के साथ भी समन्वय बैठकें आयोजित की जा चुकी हैं। मतदान दलों को मतदान सामग्री का वितरण, इंजीनियरिंग कालेज रीवा से किया जाएगा। मतदान के बाद ईव्हीएम तथा मतदान सामग्री इंजीनियरिंग कालेज में ही जमा होगी। मतगणना भी इंजीनियरिंग कालेज में की जाएगी। कलेक्टर ने कहा कि सभी नोडल अधिकारी प्रतिदिन की जा रही कार्यवाहियों का प्रतिवेदन प्रेक्षकों को अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराएं। जिले भर में मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। पिछले विधानसभा तथा लोकसभा चुनाव में सबसे कम मतदान वाले प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में 50 मतदान केन्द्रों में विशेष मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। बैठक में पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह ने बताया कि विधानसभा चुनाव के दौरान कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए लगातार कार्यवाही की जा रही है। अब तक पाँच हजार से अधिक बाउण्ड ओवर की कार्यवाही की गई है। प्रतिबंधात्मक कार्यवाही लगातार जारी है। पुलिस बल की उपलब्धता के आधार पर मतदान दिवस के लिए सुरक्षा की कार्ययोजना बनाकर उसके अनुरूप तैनाती की जाएगी। सभी मतदान केन्द्रों में सुरक्षा के पूरे प्रबंध रहेंगे। बैठक में व्यय प्रेक्षक श्रीमती निष्ठा तिवारी, व्यय प्रेक्षक सुदीप्ता पाल, कलेक्टर मऊगंज अजय श्रीवास्तव, पुलिस अधीक्षक मऊगंज वीरेन्द्र जैन, आयुक्त नगर निगम श्रीमती संस्कृति जैन, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ सौरभ सोनवणे, अपर कलेक्टर शैलेन्द्र सिंह, सभी रिटर्निंग आफीसर तथा सभी नोडल अधिकारी उपस्थित रहे।

दबोह में बहुजन समाज पार्टी के चुनाव कार्यालय का हुआ उद्घाटन

कार्यकर्त्ताओ को पीठ नही दिखाऊंगा-रसाल सिंह

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक पुष्पांजली टुडे

दबोह- स्थानीय लक्ष्मी गार्डन में सोमबार को बहुजन समाज पार्टी के चुनावी कार्यालय का उद्घाटन किया गया जिसमे उद्घाटन अवसर पर मुख्य अथिति बतौर सुनील बघेल प्रदेश प्रभारी बसपा एवं दिलीप बौद्ध जॉन प्रभारी चंबल बसपा मेघ सिंह नरवरिया जिलाध्यक्ष मोजूद रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ सर्व प्रथम संविधान के निर्माता बाबा साहब ज्योतिराव फूले की के छाया चित्र पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया कार्यक्रम में हजारों कार्यकर्ताओ ने भाग लिया।कार्यालय का उद्घाटन के मौके पर लहार विधानसभा प्रत्याशी विधायक रसाल सिंह ने कार्यकर्ताओ का मंच से स्वागत कर उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए उन्हे भरोसा दिलाया की पीठ नही दिखाऊगा।कार्यकर्ताओ के सम्मान में कभी भी ठेस नही पहुचाऊगा आपके स्नेह प्रेम और दुलार की लाज रखूंगा।कार्यकर्ताओ के सुख दुःख में हमेशा खड़ा रहूंगा उन्होंने खुले मंच से कांग्रेस और भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि ये पार्टियां पूजीपद की पार्टी है मेरे साथ पूर्व में भाजापा पार्टी ने ही छल किया है बसपा पार्टी में आकर मेरे मन को शांति मिली है।कार्यकर्ताओ का मुझे अपार समर्थन मिल रहा है उन्होंने कहा कि बसपा की सुप्रीमो सुश्री बहिन मायावती जी का लहार आगमन होने जा रहा है आप लोग कार्यक्रम में शामिल होकर हमारा हौसला बढ़ाए।वहीं कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ओजस्वी वक्ता लहार विधानसभा प्रभारी बसपा एन.डी.धौलपुरिया ने कहा कि मध्यप्रदेश में इस बार के विधानसभा चुनाव में पार्टी ने योग्य और अनुभवी उम्मीदवारों को मैदान में उतारा है भिंड जिले की 05 सीटो पर बसपा चुनाव जीतेगी आप लोगो ने वर्षो से को दर्द सहा है उसका हिसाब लहार विधानसभा से बसपा उम्मीदवार को चुनावी जीतकर लेना है बसपा पार्टी में हर एक कार्यकर्ता की बात सुनी जाती हे आप लोग अपने गली मुहल्ले गांव नगर में रसाल सिंह जी के लिए बोट मांगे और चुनाव जिताए आप लोगो का आज जनमत देखकर कांग्रेस और भाजपा को बहुत बड़ा झटका लगेगा कार्यालय उद्घाटन के मौके पर सैकडो लोगों ने कांग्रेस और भाजपा पार्टी छोड़ बसपा की सदस्यता ली योगेंद्र सिंह,गोपीराम कुशवाह, सुखदीन बघेल, संतोष झा,गोटीराम प्रजापति,अबधरानी रजक, भूरे चौधरी, बल बहादुर सिंह पूर्व पार्षद,डी.सी. मौर्य, पूर्व पार्षद अरविंद गुप्ता, पूर्व जनपद सदस्य नारायण दास बघेल, एन.डी.धौलपुरिया, मातादीन पटवारी, गजेंद्र चौहान आलमपुर, हरिमोहन कौरव गागेपुरा,रामलखन बौद्ध विधानसभा सदस्य बसपा, चाँद खान आतिशबाज, सहित हजारों लोग शामिल रहे।

नेता प्रतिपक्ष डॉ गोविंद सिंह से प्रभावित होकर कार्यकर्ता भाजपा छोड़कर काँग्रेस पार्टी में हुए शामिल

लहार की जनता में बदलाव की लहर - ड़ॉ.गोविन्द सिंह

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक पुष्पांजली टुडे

दबोह- नेताप्रतिपक्ष लहार विधायक डॉ गोबिंद सिंह से प्रभावित होकर मंगलवार को दबोह नगर के भाजपा कार्यकर्ता भाजपा छोड़कर काँग्रेस पार्टी में शामिल हो गए।कांग्रेस में शामिल होने बालो में मुख्य रूप से टिंकू कुरेले,सजंय कुरेले,मोहम्मद खाँ,दीपू राठौर,बांकेविहारी रजक,विजय वर्मा ब?गाँव,सहित एक दर्जन लोग भाजपा समर्थक काँग्रेस पार्टी में हुये शामिल।इस मौके पर नगर परिषद के उपाध्यक्ष हाकिम सिंह चौधरी ने सभी भाजपा समर्थको को काँग्रेस पार्टी की सदस्ता दिलाई।वही जिला महासचिव रमाशंकर चौधरी की भी मुख्य भूमिका रही।इस मौके पर नेता प्रतिपक्ष लहार विधायक ड़ॉ गोविन्द सिंह ने कहा प्रदेश में सत्ता के खिलाफ बदलाव की लहर चल रही है।जिसकी लहर लहार में भी चल रही है जिसके गाँव गांव में लोग भाजपा छो?कर काँग्रेस पार्टी में शामिल हो रहे है जिसकी घबड़ाहट में बसपा सुप्रीमो मायवती को भी

लहार आना प? रहा है।अब पूरे देश के नेता भी लहार में आ जाये फिर भी जनता को कोई फर्क नही पड़ता पांच साल जो जनता के बीच रहेगा वही चुनाव जीतेगा।वहीं उन्होंने कहा प्रदेश का खजाना खाली है लेकिन मध्यप्रदेश में डबल इंजन की स्पीड से भाजपा की घोषणा मशीन चल रही है।वहीं उन्होंने कहा कि दबोह के जो लोग कांग्रेस में शामिल हुए है उनके सम्मान में पार्टी कोई कसर नही छोड़ेगी।भाजपा समर्थक टिंकू कुरेले ने कहा सम्मान और सुरक्षा को जिन्दा रखने के लिये हम सभी ने आज ड़ॉ गोविन्द सिंह का हाथ थामा है।

अभिभाषक संघ के चुनाव सम्पन्न राधेश्याम यादव अध्यक्ष व राजेश वर्मा बने सचिव

सीहोर। सोमवार को संपन्न हुए जिला अभिभाषक संघ चुनाव के परिणामों की आज घोषणा की गई जिसमें राधेश्याम यादव अध्यक्ष तथा राजेश वर्मा सचिव निर्वाचित घोषित किए गए। जिला अभिभाषक संघ के निर्वाचन अधिकारी श्री जी के उपाध्यक्ष सहायक निर्वाचन अधिकारी जी.डी. बैरागी के अनुसार अभिभाषक संघ की मतगणना आज संपन्न हुई जिसमें अधिवक्ता राधेश्याम यादव अध्यक्ष निर्वाचित घोषित हुए उन्होंने अधिवक्ता के यूं कुरैशी को पराजित किया। इसी तरह सचिव पद पर अधिवक्ता राजेश वर्मा, उपाध्यक्ष सचिन तिवारी, सह सचिव ऋषभ दांगी (निर्विरोध) तथा हिरदेश वशिष्ठ पुस्तकालय अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किए गए. कार्यकारिणी सदस्यों में सर्व श्री विजेंद्र श्रीवास्तव, उपेंद्र सिंह, संजय सक्सेना, रंजना शर्मा, आनंद यादव, सुनील सिंह सिसोदिया, स्वाति श्रीवास्तव, विजय सक्सेना, सुनील, सतपाल सिंह, रविश सोनी, बगवैया, विभा राठौर, बरखा वर्मा, रेखा सक्सेना, सुमन सिकरवार निर्वाचित घोषित की गई।

5 अपराधियों के विरुद्ध बाउण्ड ओव्हर की प्रतिबंधात्मक कार्यवाही

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी
ब्यूरो चीफ सतना

सतना सतना जिले में शांतिपूर्ण, निष्पक्ष, भय-रहित वातावरण में आगामी विधानसभा निर्वाचन 2023 के निर्वाचन कार्यक्रम को संपन्न कराने के उद्देश्य से असामाजिक तत्वों के विरुद्ध कठोर, प्रतिबंधात्मक कार्यवाही सुनिश्चित की जा रही है। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अनुराग वर्मा ने जिले के 5आदतन अपराधियों के विरुद्ध संबंधित क्षेत्र के थाना प्रभारियों को प्रतिबंधात्मक कार्यवाही करने के आदेश जारी किये हैं। जिला मजिस्ट्रेट द्वारा कोलगवां थाना अंतर्गत नई बस्ती निवासी अंशू उर्फ शिवांक उर्फ शिवांश सिंह बरगाही पिता नंद किशोर बरगाही उम्र 25 वर्ष, थाना नागौद अंतर्गत कचलोहा निवासी लखन उर्फ लखन कपा?या पिता छोटेलाल कपा?या उम्र 50 वर्ष, थाना धारकुंडी अंतर्गत शुकवाह निवासी विनीत गौतम पिता नत्थू उर्फ राजेश गौतम उम्र 38 वर्ष, थाना रामपुर बघेलान अंतर्गत दिलीप सिंह पटेल पिता सूर्यभान सिंह उम्र 26 वर्ष एवं थाना सिंहपुर अंतर्गत टीकर निवासी राहुल उर्फ भागवेंद्र सिंह पिता बृजमोहन सिंह उर्फ मुन्ना सिंह उम्र 33 वर्ष के विरूद्ध बाउण्ड ओव्हर कर संबंधित थाना प्रभारियों को प्रतिबंधात्मक कार्यवाही करने का आदेश जारी किया है। आदेश में सभी प्रतिबंधात्मक कार्यवाही के आरोपियों को एक वर्ष तक माह के प्रथम सोमवार को अपनी उपस्थिति थाने में दर्ज कराने के लिए कहा गया है।

जिले में नरवाई जलाने की 5 घटनायें सैटेलाईट मैपिंग में आई सामने

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी
ब्यूरो चीफ सतना

सतना पर्यावरण सुरक्षा के लिये ग्रीन ट्रिब्यूनल के निर्देशानुसार फसलों (विशेषतः धान एवं गेहूं) की कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेतों में जलाना प्रतिबंधित किया गया है। जिले में भी नरवाई जलाने से होने वाली आगजनित घटनाओं पर नियंत्रण के लिये कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी अनुराग वर्मा द्वारा प्रतिबंधात्मक आदेश जारी कर अनुविभागीय दंडाधिकारियों को ऐसे व्यक्तियों के विरुद्ध दंडात्मक कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये हैं। लेकिन प्रतिबंधों के बावजूद भी जिले में नरवाई जलाने की घटनायें सामने आ रही हैं। उप संचालक किसान कल्याण एवं कृषि विकास ने बताया कि कृषि अभियांत्रिकी संचालनालय भोपाल से प्राप्त सैटेलाइट मॉनीटरिंग की रिपोर्ट अनुसार जिले के अनुविभाग रघुराजनगर, रामपुर बघेलान, मझगवां, मैहर एवं उचेहरा के एक-एक स्थान पर नरवाई जलाने की घटनायें रिकॉर्ड की गई हैं। उप संचालक कृषि ने नरवाई जलाने की 5 घटनाओं से संबंधित अनुविभागीय दंडाधिकारियों को सैटेलाइट मॉनीटरिंग की रिपोर्ट से अवगत कराते हुये जिला दंडाधिकारी के निर्देशों के अनुरुप कार्यवाही करने का अनुरोध किया है।

कलेक्टर ने दिलाई अधिकारियों-कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता की शपथ

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी
ब्यूरो चीफ सतना

सतना गृह मंत्रलाय भारत सरकार के निर्देशों के अनुपालन में प्रतिवर्ष 31 अक्टूबर को सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रुप में मनाया जाता है। इसी क?ी में मंगलवार को राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर जिलेभर में राष्ट्रीय एकता दिवस की शपथ दिलाई गई। जिला मुख्यालय पर कलेक्टर अनुराग वर्मा ने कलेक्ट्रेट के अधिकारियों-कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई। शपथ में सभी अधिकारियों-

कर्मचारियों ने राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखने के लिए स्वयं को समर्पित करने और अपने देश की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपना योगदान करने का भी सत्यनिष्ठा से संकल्प लिया। इस अवसर पर अपर कलेक्टर ऋषि पवार सहित विभिन्न विभागों के कार्यालय प्रमुख अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। इसी प्रकार कलेक्टर अनुराग वर्मा के निर्देशन में सभी जिला स्तरीय कार्यालयों, जनपद कार्यालयों तथा विकासखण्ड स्तर के सभी कार्यालयों में प्रातः 11 बजे राष्ट्रीय एकता की शपथ ली गई।

म.प्र. स्थापना दिवस का आयोजन आज

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी
ब्यूरो चीफ सतना

सतना मध्यप्रदेश स्थापना दिवस का आयोजन 1 नवंबर 2023 को किया जायेगा। इस अवसर पर स्थापना दिवस का आयोजन स्थानीय पुलिस परेड ग्राउण्ड सिविल लाइन सतना में प्रातः 9 बजे से किया जायेगा। कलेक्टर अनुराग वर्मा द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया जायेगा तथा राष्ट्रीय गान एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार पुलिस परेड ग्राउंड में प्रातः 8.55 बजे मुख्य अतिथि का आगमन, 9 बजे राष्ट्रीय ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान, 9.10 बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम, 9.30 बजे मध्यप्रदेश गान एवं 9.40 बजे कार्यक्रम का समापन होगा। कलेक्टर श्री अनुराग वर्मा ने स्थापना दिवस के आयोजन के लिए मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सतना डॉ. परीक्षित झाडे को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। जिला स्तर पर आयोजित होने वाले स्थापना दिवस के जिला स्तरीय कार्यक्रम में सभी कार्यालय प्रमुख और अधीनस्थ अधिकारी-कर्मचारियों को उपस्थित होने के निर्देश दिये गये हैं।

प्रेक्षक मानवेन्द्र प्रताप सिंह ने किया एमसीएमसी और डीसीसी, सी विजिल का निरीक्षण

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी
ब्यूरो चीफ सतना

सतना भारत निर्वाचन आयोग द्वारा विधानसभा क्षेत्र-61 चित्रकूट के लिए नियुक्त सामान्य प्रेक्षक मानवेन्द्र प्रताप सिंह ने मंगलवार को मीडिया प्रमाणन एवं अनुवीक्षण प्रकोष्ठ, डीसीसी, सी-विजिल और शिकायत प्रकोष्ठ का आकस्मिक निरीक्षण किया। इस दौरान प्रेक्षक श्री सिंह ने सभी प्रकोष्ठ के संधारित पंजियों और प्रविष्टियों का निरीक्षण कर शिकायतों के निराकरण की प्रक्रिया का जायजा लिया। एमसीएमसी प्रकोष्ठ और मीडिया प्रकोष्ठ के निरीक्षण के दौरान प्रेक्षक श्री सिंह ने प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया पर चल रही खबरों, विज्ञापन एवं पेड न्यूज संबंधी जानकारी ली। इस मौके पर शिकायत प्रकोष्ठ के नोडल अधिकारी डिप्टी कलेक्टर गोविंद सोनी, एमसीएमसी मीडिया प्रकोष्ठ के नोडल अधिकारी राजेश सिंह भी उपस्थित रहे। इस दौरान प्रेक्षक श्री सिंह ने मतदान सामग्री प्रकोष्ठ, डाक मत पत्र प्रकोष्ठ का भी निरीक्षण किया।

अटेर कांग्रेस प्रत्याशी ने भाजपा प्रत्याशी भदौरिया का नामांकन रद्द करने हेतु प्रेक्षक से की शिकायत

उमाकान्त शर्मा
दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड - अटेर से कांग्रेस प्रत्याशी पूर्व विधायक हेमंत कटारे ने भाजपा प्रत्याशी सहकारिता मंत्री अरविंद भदौरिया के विरुद्ध आचार संहिता उल्लंघन के मामले में मामला दर्ज करने और नामांकन फार्म में जानकारी छुपाने को लेकर उनका नामांकन रद्द करने की शिकायत चुनाव आयोग से भेजे गए अटेर प्रेक्षक से की है। साथ ही उन्होंने प्रेक्षक को इसके प्रमाण भी उपलब्ध कराए हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार हेमंत कटारे सुबह 10.30 बजे सर्किट पहुंचे और चुनाव आयोग के द्वारा अटेर के प्रेक्षक बनाकर भेजे गए आई.ए एस मोहम्मद रोशन से मुलाकात की और शिकायतों के प्रमाण सौंपते हुए उन पर कार्यवाही करने की मांग की। उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन भाजपा प्रत्याशी की मदद

कर रहा है। और उनको प्रोटेक्ट कर रहा है उनके द्वारा पूर्व में भी कलेक्टर से आचार संहिता के दौरान मंत्री के द्वारा जनता दरबार लगाए जाने और उसमें सरकारी कर्मचारियों के उपस्थित होने की प्रमाण सहित शिकायत की थी। उस पर कलेक्टर ने कर्मचारियों पर तो कार्यवाही कर दी है। लेकिन भाजपा प्रत्याशी पर अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की है। दूसरी शिकायत भाजपा प्रत्याशी के द्वारा नामांकन फार्म में जानकारी छुपाने को लेकर की है जिसमें भाजपा प्रत्याशी के द्वारा तीन बिंदुओं पर जानकारी छुपाई गई है। जिसमें उन्होंने विरासत में मिली संपत्ति के कॉलम को निरंक भरा है। जबकि प्रमाण में वारिस के रूप में भाजपा प्रत्याशी अरविंद भदौरिया भी हिस्सेदार बताए गए है। जिसके आधार पर उनका नामांकन फार्म निरस्त करने की मांग की है। प्रेक्षक ने नियमानुसार कार्यवाही करने का भरोसा दिलाया है ।

आकर्षक रंगोली बनाकर दिया मतदाता जागरूकता का संदेश

उमाकान्त शर्मा दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड।कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री संजीव श्रीवास्तव के निर्देश पर स्वीप गतिविधियों के तहत् विभिन्न मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं और मतदाताओं को अधिक से अधिक मतदान के लिए प्रेरित किया जा रहा है। मतदाता जागरूकता अभियान के तहत् विधानसभा मेहगांव के ग्राम कृपे का पुरा में रंगोली एवं चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस दौरान विधानसभा मेहगांव में महिला एवं बाल विकास विभाग की आंगनबा?ी कार्यकर्ता एवं सहायिकाओं ने रंगोली बनाकर मतदाता जागरूकता का संदेश दिया।उन्होंने रंगोली के रंगों से मतदाता जागरूकता के लिए रंगोली बनाकर मतदाताओं को अधिक से अधिक मतदान के लिए प्रेरित किया। साथ ही उपस्थित मतदाताओं को मतदाता जागरूकता की शपथ दिलाई। जिले में मतदाता जागरूकता अभियान के तहत् जिले में स्वीप गतिविधियां प्रतिदिन आयोजित की जा रही हैं।

पुलिस थाना करैरा ने चेक बाउंस के 8 वर्ष पुराने प्रकरण में वांटेड स्थाई गिरफ्तारी वारंटी को किया गिरफ्तार ।

हरिओम चतुर्वेदी। पत्रकार

करैरा,।पुलिस अधीक्षक श्री रघुवंश कुमार सिंह जी के निर्देशन में स्थाई गिरफ्तारी वारंटी को पकड़ने का अभियान चलाया जा रहा है। धरपकड़ अभियान के तहत अति0 पुलिस अधीक्षक श्री संजीव मुले एवं श्रीमान एस.डी.ओ. पी. करैरा श्री शिवनारायण मुकाती के मार्गदर्शन में व थाना थाना प्रभारी करैरा निरीक्षक श्री सुरेश शर्मा के नेतृत्व दिनांक 31.10.2023 को वर्ष 2015 के चेक बाउंस के प्रकरण में स्थाई गिरफ्तारी वारंटी रामनाथ लोधी पुत्र मोहनलाल लोधी उम्र 60 वर्ष निवासी ग्राम कछौआ थाना पिछोर को उसके ग्राम कछौआ से मुखबिर की सूचना पर गिरफ्तार किया । स्थाई गिरफ्तारी वारंटी धारा धारा 138 नेगोशिएबल इंस्ट्रूमेंट एक्ट में कोर्ट से जारी स्थाई गिरफ्तारी वारंट में कई वर्ष से गिरफ्तारी से बचने के पुलिस को चकमा दे रहा था जिसे आज गिरफ्तार किया। स्थाई गिरफ्तारी वारंटी को गिरफ्तार करने में पुलिस थाना करैरा के सउनि शैलेन्द्र सिंह चौहान, सउनि सुबोध टोप्पो, प्रधान आरक्षक राजेंद्र यादव, आरक्षक चन्द्र शेखर मीणा व आरक्षक आरक्षक राधे जादौन की मुख्य भूमिका रही।

शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बदरवास में मनाई गई सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती

संवादाता हरिओम परिहर की रिपोर्ट

बदरवास- एकता दिवस के उपलक्ष्य में बदरवास के शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय द्वारा सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती मनाई गई जिसमें कई छात्राओं ने सरदार पटेल पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया उसके बाद शिक्षक चंपालाल ओझा द्वारा सरदार पटेल के जीवन चरित्र का वर्णन विद्यार्थियों के सम्मुख रखा इसी क्रम में एक राष्ट्रभक्ति गीत के माध्यम से शिक्षिका बसंती मिंज द्वारा राष्ट्रभक्ति का संदेश गीत के माध्यम से दिया शिक्षक कपिल परिहार द्वारा बताया गया की सरदार वल्लभभाई पटेल ने भारत को जोड़ने का जो संकल्प लिया उसे पूरा करके दिखाया अर्थात भारत को भारत बनाने का श्रेय देश के पहले गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल को जाता है इसके बाद विद्यालय के प्राचार्य श्री चंद्रवीर सिंह सेंगर द्वारा विद्यार्थियों को महापुरुषों की जीवनी का अध्ययन करने और महापुरुषों के जीवन

चरित्र को आत्मसात करने का आग्रह विद्यार्थियों से किया उसके बाद छात्र सृष्टि भट्ट द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया इस कार्यक्रम में श्री चंद्रभान श्रीवास्तव, ममता श्रीवास्तव,ममता यादव, मिथलेश मीणा, उदय रावत, चंपालाल कुशवाह, संतोष ओझा, लक्ष्मण राठौर, श्रीकृष्ण सुमन, शालिनी श्रीवास्तव, नवेदअली हाशमी, नीतू श्रीवास्तव और बलराम परिहार के साथ सैकड़ों छात्रायें उपस्थित रहीं

पुलिस विभाग से सेवानिवृत्त हुए पुलिस अधिकारी व कर्मियों को एसपी ग्वालियर ने दी विदाई

दैनिक पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। आज दिनांक को पुलिस अधीक्षक ग्वालियर श्री राजेश सिंह चंदेल,भापुसे द्वारा पुलिस विभाग से सेवानिवृत हुए पुलिस अधिकारी व कर्मचारियों को विदाई दी गई। इस मौके पर अति0 पुलिस अधीक्षक ग्रामीण निरंजन शर्मा,भापुसे एंव अति पुलिस अधीक्षक शहर-पश्चिम श्री गजेन्द्र सिंह वर्धमान, अति पुलिस अधीक्षक शहर-मध्य श्री अखिलेश रैनवाल, डीएसपी मुख्यालय श्री अशोक सिंह जादौन, डीएसपी रेडियो श्री राजकुमार कुशवाह सेवानिवृत्त हो रहे उप पुलिस अधीक्षक श्री अजय भार्गव, रक्षित निरीक्षक श्री सत्य प्रकाश मिश्रा पुलिस लाईन ग्वालियर सहित कार्यालयीन स्टाफ एंव सेवानिवृत हुए पुलिस अधिकारी व कर्मचारियों के परिजन उपस्थित रहे।आज पुलिस कन्ट्रोल रूम ग्वालियर सभागार में पुलिस सेवा से सेवानिवृत्त हो रहे पुलिस अधिकारी व कर्मचारियों के लिये विदाई समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें पुलिस अधीक्षक ग्वालियर द्वारा पुलिस विभाग से सेवानिवृत हो रहे पुलिस

अधिकारी व कर्मचारियों को प्रमाण पत्र व स्मृति चिन्ह देकर विदाई दी गई। पुलिस अधीक्षक ग्वालियर ने सेवानिवृत्त पुलिसकर्मियों से नौकरी के दौरान उनके अनुभवों को भी साझा किया। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक ग्वालियर ने सेवानिवृत्त हुए पुलिसकर्मियों से उनके भविष्य के कार्यकलापों के बारे में जाना तथा उनको सेवानिवृत्त उपरांत स्वयं को सामाजिक कार्यो में व्यस्त करने की सलाह दी जिससे अभी तक रही व्यस्तता की दिनचर्या से बाहर निकलने में मदद मिलेगी। कार्यक्रम के समापन पर पुलिस अधीक्षक ग्वालियर ने आज सेवानिवृत्त हो रहे पुलिसकर्मियों को प्रमाण पत्र, स्मृति चिन्ह ट्रैवलर बेग भेंट कर उनके बेहतर स्वास्थ्य व उज्जवल भविष्य की कामना की। पुलिस अधीक्षक ग्वालियर द्वारा सेवानिवृत्त हो रहे सभी अधिकारी एंव कर्मचारियों से उनकी सेवाकाल के दौरान किये गये कार्यो की जानकारी ली गई ।

सेवानिवृत होने वाले पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारिगण इस प्रकार है

उप पुलिस अधीक्षक श्री अजय भार्गव, उनि0(अ) ज्ञानप्रकाश शर्मा, सउनि0 धर्मवीर सिंह चौहान, सउनि0 अशोक कुमार मिश्रा, सउनि0 अनिल कुमार शुक्ला, सउनि0 हरी सिंह।

इंजीनियरिंग कालेजों में अंतिम दिन हुए 915 प्रवेश, 64 हजार सीटें खाली

भोपाल। प्रदेश के इंजीनियरिंग कालेजों में खाली करीब 64 हजार सीटों को भरने के लिए कालेज लेवल काउंसलिंग (सीएलसी) राउंड हुई। तकनीकी शिक्षा संचालनालय (डीटीई) द्वारा प्रवेश के लिए 27 से 30 अक्टूबर तक चलाए गए सीएलसी राउंड में विभिन्न पाठ्यक्रमों में 1649 पंजीयन हुए, जिसमें 915 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया। वहीं, 11 पाठ्यक्रम ऐसे हैं, जिनमें किसी भी विद्यार्थी ने प्रवेश नहीं लिया। बता दें कि डीटीई के 20 पाठ्यक्रमों की 2.14 लाख सीटों पर अब तक 1.50 लाख प्रवेश हुए हैं। ऐसे में, इस साल करीब 64 हजार सीटें खाली रह गई हैं। वहीं, आर्किटेक्चर में मंगलवार को प्रवेश लेने की अंतिम तारीख थी। इस प्रकिया के तहत एआइसीटीई द्वारा अनुमोदित पाठ्यक्रमों बीई/बीटेक में प्रवेश के लिए इंजीनियरिंग डिप्लोमा के आधार पर एंट्री दी जा रही है।आइटीआइ से डिप्लोमा, डिप्लोमा (एमओएम/बीसीसी/फिल्म टेक्नोलाजी एंड टीवी प्रोडक्शन) आदि में डिप्लोमा के आधार पर इंजीनियरिंग में प्रवेश दिया जा रहा है। वहीं, एमटेक-एमई (पूर्ण कालिक), एमबीए (पूर्ण कालिक) और एमसीए कोर्स के लिए बीई/बीटेक, बी डिजाइन, एकीकृत एमबीए, एकीकृत एमसीए, बैचलर इन होटल मैनेजमेंट एंड कैटरिंग टेक्नोलोजी के आधार पर प्रवेश दिए जा रहे हैं।

सबसे अधिक एमबीए में सीटें खाली-इस सीएलसी राउंड के तहत इंजीनियरिंग कालेजों में सबसे अधिक पंजीयन एमबीए के लिए हुए हैं। एमबीए के लिए 1099 पंजीयन हुए, जबकि इसमें 580 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है। वहीं, अब तक एमबीए में 57 हजार सीटों पर 38 हजार विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है।

दिग्विजय सिंह के करीबी और महल विरोधी राजनीति के झंडाबरदार हैं डा गोविंद सिंह

ग्वालियर। ग्वालियर-अंचल की राजनीति में तीन दशक पहले महल के समर्थन के बगैर स्थापित होना लगभग असंभव सा था। दल चाहे भाजपा हो या कांग्रेस। समाजवाद की मिट्टी में जन्मे डा. गोविंद सिंह इस मामले में अपवाद रहे। प्रदेश के प्रमुख समाजवादी नेता रघु ठाकुर के सान्निध्य में गोविंद सिंह ने राजनीति में कदम रखा।छात्र संघ की राजनीति के साथ सहकारिता के क्षेत्र में मजबूत पकड़ बनाकर पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के करीब आए और महल विरोधी राजनीति के झंडाबरदार बन गए। वे आज भी महल पर कोई हमला करने से नहीं चूकते हैं। राजनीतिक कटुता समाप्त करने के लिए केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया उनके निवास पर भोजन करने के लिए भी गए, किंतु महल के प्रति उनका रुख कभी नरम नहीं पड़ा।

लहार सीट अभेद्य किला-गोविंद सिंह ने 1990 में लहार विधानसभा सीट से चुनाव से पहला चुनाव लड़ा और यहां अपना पैर अंगद की तरह जमा दिया। यह सीट आज भी भाजपा के लिए अभेद्य किला बनी हुई है। लहार सीट जीतना विपक्षी दलों के लिए पिछले 33 वर्ष से एक सपना बनकर रह गया है। राज्य सरकार में गृहमंत्री, सहकारिता मंत्री से लेकर विधानसभा सचेतक के लिए संगठन में कई जिम्मेदार पद का निर्वहन सफलतापूर्वक किया।

ग्वालियर में घर में रखे पटाखों में धमाके के बाद उड़ गई छत, कई लोग घायल

ग्वालियर. । ग्वालियर के शंकरनगर स्थति गोल पहाड़िया इलाके में मंगलवार सुबह एक घर में रखी आतिशबाजी में विस्फोट हो गया। विस्फोट इतना जबरदस्त था कि मकान की छत उड़ गई। घटना में करीब आधा दर्जन लोग घायल हुए हैं। घायलों को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहां पर उन का उपचार चल रहा है। घटना के बाद पुलिस मौके पर पहुंची गई और आतिशबाजी की आग को बुझाने के लिए फायरब्रिगेड को बुलाया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पुलिस से जुड़े सूत्र बताते हैं कि मकान में दीपावली को देखते हुए अवैध रूप से आतिशबाजी बनाई जा रही थी और उसका अवैध रूप से भंडारण किया गया था। मंगलवार सुबह किसी वजह से आतिशबाजी के जखीरे में आग लग गई और मकान की छत उड़ गई। मकान में हुए विस्फोट से पूरे मोहल्ले में दहशत का माहौल बन गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

फ्लाइओवर की प्राथमिकता में पिछड़ा ग्वालियर सागर-इंदौर में हुए टेंडर, यहां सर्वे भी पूरा नहीं

ग्वालियर केंद्र सरकार की सेतु बंधन योजना के अंतर्गत 850 करोड़ रुपए की लागत से प्रदेश के 10 शहरों में प्रस्तावित 21 फ्लाइओवर में से दो का निर्माण ग्वालियर में भी होना है। इनके लिए आमखो से महाराज बाड़ा और हजीरा से चार शहर का नाका का चयन किया गया है, क्योंकि इन दोनों स्थानों पर दिनभर ट्रैफिक जाम की समस्या बनी रहती है। गत वर्ष नवंबर माह में इन फ्लाइओवर के निर्माण की डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करने के लिए कंसल्टेंसी एजेंसी का चयन किया गया था। कंपनी ने आकर यहां सर्वे की शुरूआत भी कर दी, लेकिन प्राथमिकता के मामले में ग्वालियर पिछड़ गय

कालेजों में अंतिम दिन हुए 915 प्रवेश, 64 हजार सीटें खाली-कंपनी को इंदौर, भोपाल और सागर में पहले सर्वे पूरा करने के लिए कहा गया, जिसके चलते ग्वालियर का प्रोजेक्ट होल्ड पर चला गया। इन शहरों में डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार होने के साथ ही फ्लाइओवर के टेंडर तक बात पहुंच गई है, जबकि ग्वालियर में अभी फिजिबिलिटी रिपोर्ट भी तैयार नहीं हो पाई है। सेतु बंधन योजना के अंतर्गत इंदौर में पांच, भोपाल में तीन, ग्वालियर में दो, सागर में चार, जबलपुर में दो सहित रतलाम, खंडवा, धार, छतरपुर और विदिशा में एक-एक फ्लाइओवर प्रस्तावित किया गया था। राज्य सरकार ने सेतु बंधन योजना में प्रस्तावित फ्लाइओवर में सबसे ज्यादा प्राथमिकता इंदौर शहर को दी है। यही कारण है कि इंदौर में प्रस्तावित पांच में से चार फ्लाइओवर के सर्वे का कार्य पूरा होने के साथ ही इसके टेंडर जारी करने की तैयारी कर ली गई है। वहीं सागर के चार में से एक सहित धार और विदिशा में प्रस्तावित फ्लाइओवर की भी यही स्थिति है। इनका सर्वे भी पूरा होने के साथ ही लागत भी तय हो गई है। निर्माण से पहले तकनीकी पहलुओं पर नजर रखने के लिए अब सिर्फ सलाहकार फर्म की नियुक्ति का काम शेष रह गया है। ग्वालियर में अभी तक कोई प्रगति नहीं हो सकी है। सर्वे का काम भी पिछड़ा हुआ है।

ग्वालियर में सबसे ज्यादा 23, दक्षिण में सबसे कम 12 नामांकन

ग्वालियर (नप्र)। विधानसभा चुनाव-2023 के लिए मैदान में उतरने सोमवार को नामांकन दाखिले के आखिरी दिन तक नामांकनों का आंकड़ा 105 तक पहुंच गया। सबसे ज्यादा दावेदार अभी तक ग्वालियर विधानसभा में सामने आए हैं, जिनकी संख्या 23 है। सबसे कम नामांकन दक्षिण विधानसभा में 12 जमा हुए। ग्वालियर पूर्व और डबरा विधानसभा में बराबर 17-17 नामांकन प्राप्त हुए। वहीं ग्वालियर ग्रामीण विधानसभा में 22 तो भितरवार विधानसभा में 14 नामांकन आए हैं। अब नाम वापसी का समय दो नवंबर तक है तो जांच में कमी पाए जाने और वापसी लेने पर संख्या घट सकती है।जों में अंतिम दिन हुए 915 प्रवेश, 64 हजार सीटें खालीनामांकन पत्रों की जांच मंगलवार को होगी। नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा का कार्य सुबह 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक कलेक्ट्रेट में विधानसभा क्षेत्रवार निर्धारित संबंधित रिटर्निंग ऑफीसर के कक्ष में किया जायेगा। विधानसभा ग्वालियर ग्रामीण के रिटर्निंग आफीसर व एसडीएम ग्वालियर ग्रामीण बृजबिहारी लाल श्रीवास्तव प्राप्त नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा करेंगे। ग्वालियर विधानसभा क्षेत्र के नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा एसडीएम ग्वालियर सिटी एवं रिटर्निंग आफीसर अतुल सिंह कलेक्ट्रेट में प्रथम तल पर स्थित कक्ष क्र.-208 में करेंगे। ग्वालियर पूर्व के नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा एसडीएम झांसी रोड व रिटर्निंग अधिकारी विनोद सिंह द्वारा की जायेगी। ग्वालियर दक्षिण के नाम निर्देशन पत्रों की जांच एसडीएम लश्कर व रिटर्निंग आफीसर नरेश चंद्र गुप्ता करेंगे।

वन विभाग के ऑफिस में सरकारी दस्तावेजों की चोरी; साल 2016 से 2022 तक का राजस्व रिकॉर्ड हुआ गायब

मध्यप्रदेश के ग्वालियर के डीएफओ ऑफिस में सरकारी दस्तावेजों की चोरी का मामला सामने आया है। जिले के वन मंडल अधिकारी दफ्तर के व्यय शाखा से जो दस्तावेज चोरी हुए हैं, वह वन विभाग के अहम दस्तावेज हैं। हैरानी की बात तो यह है कि ग्वालियर का डीएफओ ऑफिस शहर के सबसे पॉश इलाके सिटी सेंटर में है। जहां उसके ठीक सामने ग्वालियर के एसपी का कार्यालय है और आसपास बड़े-बड़े सरकारी दफ्तर भी हैं। यह चोरी दफ्तर के पीछे वाले हिस्से से खिड़की काटकर की गई है, जिससे दस्तावेजों से भरे हुए करीब 25 से 30 बंडल चोरी किए गए हैं।

हालांकि वन विभाग की ओर से यह भी बताया गया है कि यह सभी दस्तावेज पहले से ही ऑडिट एंट्री कर लिए गए थे। बावजूद इसके इनका चोरी होना समझ से परे है। फिर भी घटना की जांच कराई जा रही है। जानकारी ऐसी भी मिली है कि जो दस्तावेज चोरी हुए हैं, उनमें जांच से जुड़ी कई अहम फाइल हैं। उनकी चोरी में विभाग के किसी कर्मचारी के शामिल होने की शंका जताई जा रही है। पुलिस ने घटना को लेकर मामला दर्ज कर लिया है और जांच शुरू कर दी है।

डीएफओ अंकित पांडे

ग्वालियर डीएफओ अंकित पांडे-वहीं, डीएफओ अंकित पांडे ने बताया कि जो रिकॉर्ड गायब हुए वह साल 2016 से लेकर 2022 तक के हैं। वहीं, पहली बार इतनी ज्यादा संख्या में राजस्व का रिकॉर्ड चोरी होना अधिकारियों को समझ में नहीं आ रहा है। सरकारी रिकॉर्ड में वन विभाग द्वारा कराए गए कामों के बदले हुए भुगतान के वाउचर हैं। इन्हीं वाउचर के माध्यम से समय-समय पर गड़बड़ी के मामले भी सामने आते रहे हैं। चोरी की घटना के बाद दिन भर वन विभाग के अधिकारी अपने स्तर पर जांच में जुटे हैं।

वहीं, अधिकारियों का मानना है कि इस पूरी चोरी की घटना में विभाग का कोई कर्मचारी शामिल हो सकता है। इसको लेकर भी विभागीय स्तर की जांच चल रही है। इस मामले में जो भी दोषी होगा उसपर कड़ी कार्रवाई भी की जाएगी।

MPCCI में सम्पत्ति कर जमा शिविर आयोजित

एक करोड़ 40 लाख से अधिक का राजस्व निगम के खजाने में हुआ जमा

दैनिक पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। म.प्र. चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री द्वारा आज 'चेम्बर भवनक्र में सम्पत्ति कर जमा शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष-डॉ. प्रवीण अग्रवाल, संयुक्त अध्यक्ष-हेमंत गुप्ता, मानसेवी सचिव-दीपक अग्रवाल, मानसेवी संयुक्त सचिव-पवन कुमार अग्रवाल, कोषाध्यक्ष-संदीप नारायण अग्रवाल, नगर निगम उपायुक्त-ए.पी.एस. भदौरिया, अनिल दुबे सहित व्यापारी एवं उद्योगपति उपस्थित रहे। व्यापारियों एवं उद्योगपतियों सहित आमजन की सुविधा की दृष्टि से 'चेम्बर भवनक्र में आज प्रातः 11.00 बजे से सायं 05.00 बजे तक सम्पत्ति कर जमा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में व्यापारियों, उद्योगपतियों सहित आमजन के द्वारा शिविर में बढचढकर भाग लेते हुए अपना सम्पत्ति कर जमा

कराया गया। आज आयोजित शिविर में नगर निगम के खजाने में एक करो? 40 लाख से अधिक का राजस्व जमा किया गया।इस अवसर पर मध्यप्रदेश चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री द्वारा 'चेम्बर भवनक्र का 4,45,483/- का संपत्ति कर जमा कराया गया। शिविर में कार्यकारिणी समिति सदस्य-रवि कुमार गर्ग, आशीष अग्रवाल, दीपक श्रीचंद जैस्वानी, कृष्णबिहारी गोयल, द्वारकादास गुप्ता, मुकेश गोयल, नंदकिशोर गोयल, संजय गोयल, रोशन गाबरा, विवेक बंसल, निर्मल जैन, राकेश लहारिया आदि सहित सहायक संपत्ति कर अधिकारी-महेन्द्र शर्मा, महेश पाराशर, महेश कुशवाह, टी.सी.-विनीत शर्मा, इरशाद खान, ब्रजपाल भदौरिया, वृंदावन माहौर, मनीष पाराशर, देवेन्द्र डगरौलिया आदि शामिल रहे।

ग्वालियर में कब दिखेगा करवा चौथ का चांद;

आकाश में इंतजार कराने वाला चंद्रमा आपको अपने घर-आंगन या छत से करवा चौथ पर कितने बजे दिखेगा? इसकी गणना आप खुद सटीक रूप से कर सकती हैं। नेशनल अवार्ड प्राप्त विज्ञान प्रसारक सारिका घारू ने चंद्रोदय के खगोलविज्ञान को लेकर बताया कि 31 अक्टूबर को तृतीया तिथि को शाम आप चंद्रोदय का इंतजार करते हुए उसको आपके घर से देखने का समय नोट करें। इसमें 52 मिनट जो?कर जो समय आएगा, वह आपके करवा चौथ के चंद्रदर्शन का सटीक समय होगा।सारिका ने बताया कि पृथ्वी की मासिक परिक्रमा करता चंद्रमा प्रतिदिन लगभग 12 डिग्री आगे ब6]ता रहता है। इस कारण कृष्णपक्ष में हम पृथ्वी के किसी भाग से लगभग 50 मिनिट बाद उस चंद्रमा को देख पाते हैं। बुधवार को करवा चौथ का चंद्रमा मंगलवार उदित चंद्रमा के लगभग 52 मिनट बाद उदित होगा।सारिका ने बताया कि चंद्रोदय होना और आपके घर-आंगन से चंद्रदर्शन होना दो अलग-अलग स्थितियां हैं। जरूरी नहीं ह

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478